समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 85**

परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिए गए हैं।

(i) अपनी उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ के ऊपर बायीं ओर दिए गए वृत्त में प्रश्न–पत्र सीरीज़ अवश्य लिखें।

(ii) प्रश्नों के उत्तर देते समय जो प्रश्न संख्या प्रश्न–पत्र पर दर्शाई गई है, उत्तर पुस्तिका पर वही प्रश्न संख्या लिखना अनिवार्य है।

(iii) उत्तर–पुस्तिका के बीच में खाली पन्ना/पन्ने न छोड़ें।

(iv) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्र.1 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

राष्ट्रीयता एक पुनीत भावना है। जब मनुष्य एवं समाज अपने क्षुद्र स्वार्थों को त्याग कर देश के व्यापक हित तथा जनकल्याण की ओर अग्रसर होता है तब इस भावना का विकास होता है। राष्ट्र के सुख में प्रत्येक व्यक्ति सुखी और उनके दुःख में दुखी रहकर सच्ची राष्ट्रीयता का अनुभव करता है। आधुनिक युग में राष्ट्रीयता की भावना को पाश्चात्य देन कहा जाता है, किन्तु भारतीय मनीषियों ने शताब्दियों पूर्व राष्ट्रीयता का विकास कर उसे अन्तर्राष्ट्रीय और विश्व बन्धुत्व की सीमा तक पहुंचा दिया था। अथर्ववेद के "पृथ्वीसूक्त" में जिस अनेकता में एकता का संदेश है वह अत्यन्त दुर्लभ है। इस सूक्त में मातृभूमि की गौरूप में कल्पना अत्यन्त मनोरम है। यह धेनुरूपनी पृथ्वी विविध भाषा बोलने वाले तथा नाना धर्मों का पालन करने वाले जनसमूह का भिन्न–भिन्न प्रकार से पालन करती है। भारतीय लोकगीतों में राष्ट्रीयता का यही रूप उपलब्ध है जिसमें अपने इष्ट के लिए दूसरे के अनिष्ट की किंचित मात्र भी सम्भावना नहीं है। इन गीतों की राष्ट्रीय भावना विश्व बंधुत्व का मार्ग प्रशस्त करती है।

प्रश्नः

1. राष्ट्रीयता कैसी भावना है?
   (क) निर्मल भावना (ख) पुनीत भावना
   (ग) कोमल भावना (घ) कठोर भावना 1
2. अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त में क्या संदेश निहित है?
   (क) जन कल्याण के प्रति अरूचि पैदा होना। (ख) अनेकता में एकता का संदेश।
   (ग) पृथ्वी के गौरूप की कल्पना करना। (घ) भ्रष्टाचार की भावना। 1
3. भारतीय मनीषियों ने शताब्दियों पूर्व राष्ट्रीयता के विकास को कहाँ तक पहुँचा दिया?
   (क) कश्मीर तक (ख) राष्ट्र तक सीमित रख कर
   (ग) अन्तर्राष्ट्रीय और विश्व बन्धुत्व की सीमा तक (घ) हिमाचल के पूर्व भाग तक। 1
4. आधुनिक युग में राष्ट्रीयता की भावना को क्या कहा जाता है?
   (क) उत्तरी भारत (ख) राष्ट्रीय भाषा
   (ग) पाश्चात्य देन (घ) उर्दू 2
5. इस गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए।

(क) अथर्ववेद की समस्या (ख) आधुनिक युग की उपलब्धियाँ

(ग) जनकल्याण की भावना (घ) राष्ट्रीय लोकगीत और राष्ट्रीयता 1

6. राष्ट्रीयता की भावना का विकास कब और कैसे होता है? 2

7. भारतीय लोकगीतों की विशेषताएँ बताइए। 2

प्र.2 निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके अंत में दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

वक्त पर जगाओ,
नहीं तो जब बेवक्त जागेगा वह
तो जो आगे निकल गए हैं
उन्हें पाने
घबरा के भागना यह।
घबरा के भागना अलग है
क्षिप्र गति अलग है
क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है
सूरज इसे जगाओ
पवन इसे जगाओ
पंछी, इसके कानों पर चिल्लाओ।

प्रश्न

1. उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक बताइए।

(क) बेवक्त जागना (ख) क्षण भर

(ग) वक्त पर जागो (घ) भागना 1

2. कवि किसे जगाने का प्रयास करता है?

(क) पक्षियों को (ख) व्यक्ति को

(ग) सूरज को (घ) पृथ्वी को 1

3. बेवक्त जागने पर क्या होगा?

(क) होशियारबनेगा (ख) पीछे रह जाएगा

(ग) सफलता पाएगा (घ) बेहस करेगा 1

4. कवि जगाने के लिए किनसे अनुरोध करता है?

(क) सूरज (ख) पवन

(ग) पक्षियों (घ) उपर्युक्त तीनों से 1

5. वक्त पर जागने से क्या होगा?

(क) आगे निकल जाएगा (ख) असफल हो जाएगा

(ग) घबरा जाएगा (घ) चिल्लायेगा 1

6. घबरा के भागने से क्या हो सकता है? 2

7. कवि इस कविता के माध्यम से क्या संदेश देना चाहता है? 2

सूरज इसे जगाओ पवन इसे जगाओ पंक्ति में कवि किसे जगाने की बात कर रहा है। 2

प्र.3 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए : 5

(क) विद्यार्थी और अनुशासन
(ख) साहित्य और समाज
(ग) नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता
(घ) पर्यावरण का प्रदूषण
(ङ) हिमाचल और पर्यटन

प्र.4 छात्रवृत्ति प्राप्त करने अथवा आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए प्रधानाचार्य को निवेदन पत्र लिखिए। 5

अथवा

अपने मोहल्ले में बढ़ती चोरियों एवं अपराध की रोकथाम के लिए जिला प्रशासन अधिकारी अथवा थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

प्र.5 इंटरनेट पत्रकारिता क्या है? इसके स्वरूप और इतिहास पर प्रकाश डालिए। 4

अथवा

समाचार लेखन के छः ककारों के बारे में संक्षेप में बताओ।

प्र.6 कविता–लेखन से संबंधित दो मत क्या हैं? 4

अथवा

नाटक किसे कहते हैं ? इसकी भाषा–शैली कैसी होनी चाहिए?

प्र.7 निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

3

माँ की कुल शिक्षा मैंने दी,
पुष्प–सेज तेरी स्वयं रची,
सोचा मन में, ''वह शकुन्तला,
पर पाठ अन्य यह, अन्य कला।''
कुछ दिन रह गृह तू फिर समोद,

बेटी नानी की स्नेह–गोद;
मामा–मामी का रहा प्यार;
भर जलद धरा को ज्यों अपार,
वे ही सुख–दुख में रहे न्यस्त
तेरे हित सदा समस्त, व्यस्त,
वह लता वहीं की, जहां कली
तू खिली, स्नेह से हिली, पली,
अन्त भी उसी गोद में शरण
ली, मँदे दृग वह महामरण!

अथवा

के पतिआ लए जाएत रे मोरा पिअतम पास।
हिए नहि सहए असह दुख रे भेल साओन मास।।
एकसरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहलो न जाए।
सखि अनकर दुख दारून रे जग के पतिआए।।
मोर मन हरि हर लाए गेल रे अपनो मन गेल।
गोकुल तेजि मधुपुर बस रे कन अपजस लेल।।
विद्यापति कवि गाओल रे धनि धरू मन आस।
आओत तोर मन भावन रे एहि कातिक मास।।

प्र.8 निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 3 6

(क) ''कार्नेलिया का गीत'' कविता में प्रसाद ने भारत की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है?

(ख) 'खाली कटोरों में बसन्त का उतरना से क्या आशय है?'

(ग) ''मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ'' में राम के स्वभाव की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया गया है?

(घ) देवी सरस्वती की उदारता का गुणगान क्यों नही किया जा सकता?

प्र.9 निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए : 4

हेम कुंभ ले उषा सवेरे–भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊँघते रहते जब जग कर रजनी भर तारा।।

अथवा

सिंधु तर्‌यो उनको बनरा, तुम पै धनुरेख गई न तरी।

प्र.10 निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए : 5

(क) तुलसीदास

(ख) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(ग) घनानंद

प्र.11 निम्नलिखित में से किन्हीं दो गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 4 2 8

(क) पुर्ज़े खोलकर फिर ठीक करना उतना कठिन काम नहीं है, लोग सीखते भी हैं, सिखाते भी हैं, अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ीसाज़ी का इम्तहान पास कर आया है उसे तो देखने दो। साथ ही यह भी समझा दो कि आपको स्वयं घड़ी देखना, साफ़ करना और सुधारना आता है कि नहीं। हमें तो धोखा होता है कि परदादा की घड़ी जेब में डाले फिरते हो, वह बंद हो गई है, तुम्हें न चाबी देना आता है न पुर्ज़े सधारना तो भी दूसरों को हाथ नहीं लगाने देते इत्यादि।

(ख) कुछ दिनों के बाद मैंने सुना कि शेर अहिंसा और सह–अस्तित्ववाद का बड़ा ज़बरदस्त समर्थक है इसलिए जंगली जानवरों का शिकार नहीं करता। मैं सोचने लगा, शायद शेर के पेट में वे सारी चीज़ें हैं जिनके लिए लोग वहाँ जाते हैं और मैं भी एक दिन शेर के पास गया। शेर आँखें बन्द किए पड़ा था और उसका स्टाफ़ आफ़िस का काम निपटा रहा था। मैंने वहाँ पूछा, " क्या यह सच है कि शेर साहब के पेट के अन्दर, रोज़गार का दफ़्तर है?"

(ग) जो समझता है कि वह दूसरों का उपकार कर रहा है वह अबोध है, जो समझता है कि दूसरे उसका अपकार कर रहे हैं वह भी बुद्धिहीन है। कौन किसका उपकार करता है, कौन किसका अपकार कर रहा है? मनुष्य जी रहा है, केवल जी रहा है, अपनी इच्छा से नहीं, इतिहास –विधाता की योजना के अनुसार। किसी को उससे सुख मिल जाए, बहुत अच्छी बात है, नहीं मिल सका, कोई बात नहीं, परन्तु उसे अभिमान नहीं होना चाहिए। सुख पहुँचाने का अभिमान यदि गलत है तो दुःख पहुँचाने का अभिमान तो नितरां गलत है।

प्र.12 निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $1\frac{1}{2}$ 3 $4\frac{1}{2}$

(क) बचपन में लेखक के मन में भारतेन्दु जी के सम्बन्ध में कैसी भावना जगी रहती थी?

(ख) लेखक बुढ़िया को बोधिसत्व की आठ फुट लम्बी मूर्ति प्राप्त करने में सफल कैसे हुआ?

(ग) लेखक सेवाग्राम कब और क्यों गया था?

(घ) साहित्य के पाँच जन्य से लेखक का क्या अभिप्राय है?

प्र.13 निम्नलिखित में से किसी एक निबन्धकार का साहित्यिक परिचय दीजिए : $4\frac{1}{2}$

(क) पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

(ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्र.14 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4 2 8

(क) 'यह फूस की राख नहीं, उसकी अभिलाषाओं की राख थी' संदर्भ सहित विवेचन कीजिए।

(ख) शैला और भूप ने मिलकर किस तरह पहाड़ पर अपनी मेहनत से नई जिन्दगी की कहानी लिखो?

(ग) बिस्कोहर में हुई बरसात का जो वर्णन बिसनाथ ने किया, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

प्र.15 (क) ''प्रकृति सजीव नारी बन गई' इस कथन के संदर्भ में लेखक की प्रकृति, नारी और सौन्दर्य संबंधी मान्यताएं स्पष्ट कीजिए। 4

अथवा

यूँ तो प्रायः लोग घर छोड़ कर कहीं न कहीं जाते हैं, परदेश जाते हैं किन्तु घर लौटते समय रूप सिंह को एक अजीब किस्म की लाज, अपनत्व और झिझक क्यों घेरने लगी?

(ख) 'हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को अपने गंदे पानी के नाले बना रही है।' क्यों और कैसे?

अथवा

भैरों ने सूरदास की झोंपड़ी क्यों जलाई?

4

हिन्दी 10+2
हल सहित प्रश्न-पत्र
(SOLVED QUESTION PAPER)

प्र.1 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर :

1. राष्ट्रीयता कैसी भावना है?

(क) निर्मल भावना (ख) पुनीत भावना

(ग) कोमल भावना (घ) कठोर भावना

उत्तर (ख) पुनीत भावना

2. अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त में क्या संदेश निहित हैं?

(क) जन कल्याण के प्रति अरूचि पैदा होना। (ख) अनेकता में एकता का संदेश।

(ग) पृथ्वी के गौरूप की कल्पना करना। (घ) भ्रष्टाचार की भावना।

उत्तर (ख) अनेकता में एकता का संदेश

3. भारतीय मनीषियों ने शताब्दियों पूर्व राष्ट्रीयता के विकास को कहाँ तक पहुँचा दिया?

(क) कश्मीर तक (ख) राष्ट्र तक सीमित रख कर

(ग) अन्तर्राष्ट्रीय और विश्व बन्धुत्व की सीमा तक (घ) हिमाचल के पूर्व भाग तक।

उत्तर (ग) अन्तर्राष्ट्रीय और विश्व बन्धुत्व की सीमा तक

4. आधुनिक युग में राष्ट्रीयता की भावना को क्या कहा जाता है?

(क) उत्तरी भारत (ख) राष्ट्रीयता भाषा

(ग) पाश्चात्य देन (घ) उर्दू

उत्तर (ग) पाश्चात्य देन

5. इस गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए।

(क) अथर्ववेद की समस्या (ख)आधुनिक युग की उपलब्धियाँ

(ग) जनकल्याण की भावना (घ) राष्ट्रीय लोकगीत औ राष्ट्रीयता

उत्तर (घ) राष्ट्रीय लोकगीत और राष्ट्रीयता

6. राष्ट्रीयता की भावना का विकास कब और कैसे होता है?

उत्तर राष्ट्रीयता की भावना का विकास तब होता है, जब मनुष्य एवं समाज अपने क्षुद्र स्वार्थों को त्याग कर देश के व्यापक हित तथा जन–कल्याण की ओर अग्रसर होता है और राष्ट्र के सुख में प्रत्येक व्यक्ति सुखी और उनके दुख में दुखी रह कर सच्ची भावना का अनुभव करता है।

7. भारतीय लोकगीतों की विशेषताएं बताइए।

उत्तर भारतीय लोकगीतों में राष्ट्रीयता की पुनीत भावना निहित है और साथ में इन गीतों की राष्ट्रीय भावना विश्व बन्धुत्व का मार्ग भी प्रशस्त करती है।

प्र.2 निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके प्रश्नों के उत्तर :

1. उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक बताइए।

(क) बेवक्त जागना (ख) क्षण भर

(ग) वक्त पर जागो (घ) भागना

उत्तर (ग) वक्त पर जागो

2. कवि किसे जगाने का प्रयास कर रहा है?

(क) पक्षियों का (ख) व्यक्ति को

(ग) सूरज को (घ) पृथ्वी को

उत्तर (ख)व्यक्ति को

3. बेवक्त जागने पर क्या होता है?

(क) होशियार बनेगा (ख) पीछे रह जाएगा

(ग) सफलता पाएगा (घ) बेहस करेगा

उत्तर (ख)पीछे रह जाएगा

4. कवि जगाने के लिए किनसे अनुरोध करता है?

(क) सूरज (ख) पवन

(ग) पक्षियों (घ) उपर्युक्त तीनों से

उत्तर (घ) उपर्युक्त तीनों से

5. वक्त पर जागने से क्या होगा?

(क) आगे निकल जाएगा (ख) असफल हो जाएगा

(ग) घबरा जाएगा (घ) चिल्लायेगा

उत्तर (क) आगे निकल जाएगा

6. घबरा के भागने से क्या हो सकता है?

उत्तर घबरा के भागने से उसे क्षिप्र गति से भागना पड़ेगा, जो सजग गति नहीं मानी जाती।

7. कवि इस कविता के माध्यम से क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर कवि इस कविता के माध्यम से यह करना चाहता है कि जो व्यक्ति समय के महत्त्व को नहीं समझते वह

हमेशा पीछे रह जाता है, इसलिए व्यक्ति को समय का सदुपयोग करना चाहिए।

प्र.3

विद्यार्थी और अनुशासन

उत्तर–1

विद्यार्थी जीवन की तुलना भवन की नींव से की जाती है। भवन की नींव जितनी मजबूत और सुदृढ़ होगी, मकान उतना ही टिकाऊ और स्थिर होगा। विद्यार्थी जीवन में अर्जित ज्ञान एवं संस्कार के संचयन पर ही उसके भावी जीवन की सफलता निर्भर करती है। इस समय उसका मस्तिष्क एक कोरे कागज की भांति होता है जिस पर जो लिख दिया जाता है सब अमिट हो जाता है। उसके जीवन का यह आरम्भिक अंश ऐसा होता है जब उसे अपनी चितवृतियों को केवल विद्या की साधना में केन्द्रित कर देना होता है। अगर कोई मनुष्य विद्यार्थी जीवन में मनोयोगपूर्वक अपने आपको अध्ययन और चिंतन प्रति समर्पित नहीं करता तो उसके भावी जीवन के अर्थहीन और महत्वहीन होने की संभावना बन जाती है। अनुशासन शब्द ''अनु'' उपसर्ग लगाने से बना है ''अनु'' का अर्थ है पीछे या पीछे चलने वाला''। इस प्रकार अनुशासन का शाब्दिक अर्थ हुआ–अपने माता–पिता, गुरुजनों की निगरानी में रहकर, संयम और नियम से जीवनयापन करना और उनकी आज्ञा का पालन करना।

भारत में गुरू–शिष्य की पवित्र परम्परा रही है। प्राचीनकाल में आज की तरह विद्यालय और महाविद्यालय नहीं थे और न ही वेतनभोगी अध्यापक। उस समय विद्यार्थी वन प्रदेशों में स्थापित गुरूकुलों के शान्त और पवित्र वातावरण में विद्या प्राप्त करते थे। गुरू और शिष्य के मध्य स्नेह और वात्सल्य का सम्बन्ध होता था। विद्यार्थी गुरू की आज्ञा का वेद–वाक्य मानकर पालन करते थे। विद्यार्जन ही उनका प्रमुख कर्म होता था किन्तु आश्रय से सम्बन्धित अन्य कार्य भी वे अपना कर्त्तव्य समझकर प्रसन्नतापूर्वक करते थे। आज का विद्यार्थी अनुशासनहीनता का पर्याय बन चुका है। वह पढ़ाई के अतिरिक्त और सभी चीजों में दिलचस्पी लेता है। उसका और अनुशासन का 36 का आंकड़ा है। वह अपने अधिकारों के प्रति तो असाधारण रूप से जागरूक हो जाता है परन्तु अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजगता नहीं रखता। श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने गाँधी जी से कहा था,''छात्रों के सहयोग से तुम देश को स्वतन्त्र तो करा लोगे, परन्तु उस पर शासन नहीं कर पाओगे। इन अपरिपक्व बुद्धि वाले नागरिकों के राजनीति में सक्रिय भाग लेने से अनुशासनहीनता की वह लहर उत्पन्न होगी, जिसे नियन्त्रित करना हम लोगों के लिए असंभव हो जाएगा। श्रीमती ऐनी बेसेन्ट का कथन आज सत्य प्रमाणित हो रहा है। आज का विद्यार्थी न तो अपने माता–पिता की आज्ञा का पालना करता है और न अपने गुरूजनों का सम्मान। कक्षाओं और परीक्षाओं का बहिष्कार करना वह अपना गौरव समझता है महाविद्यालयों में तो अनुशासनहीनता अपनी चरम सीमा पर है। अध्यापकों का अपमान करना, प्राचार्य एवं कुलपति का घेराव, हड़ताल करना, साथ पढ़ने वाली लड़कियो से छेड़खानी करना, तोड़–फोड़ करना, नारेबाजी करना, मकान व दुकान लूटना, सरकारी सम्पत्ति को नष्ट करना जैसे अशोभनीय कार्य विद्यार्थी–जीवन के अंग बन गए हैं। आज गुरू–शिष्य का स्नेह–सम्बन्ध इतिहास की वस्तु बन कर रह गया है। अगर विद्यार्थी वर्ग में यह अनुशासनहीनता इसी तरह बढ़ती रही तो समृद्ध सशक्त भारत के निर्माण का सपना कभी पूरा नहीं होगा।

भोगवादी जीवनशैली के कारण माता–पिता अपने बच्चे का उचित संरक्षण और मार्ग–दर्शन नहीं करते। इसके अभाव में वह अच्छे संस्कार ग्रहण नहीं करता। विद्यालय और महाविद्यालयों का खुला वातावरण उसे उच्छृखल और उद्दण्ड बना देता है। उसकी प्रतिभा का विकास नहीं हो पाता। वर्तमान शिक्षा–प्रणाली की

कमियों के कारण विद्याध्ययन के प्रति उसकी रूचि समाप्त होती जा रही है। वह पढ़–लिखकर भी बेरोजगारों की पंक्ति में खुद को खड़ा पाता है उसका मन क्षोभ से भर जाता है और वह अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष पर उतर आता है। छात्रों में बढ़ती अनुशासनहीनता के लिए कहीं न कहीं भले ही आंशिक रूप में शिक्षक वर्ग भी दोषी हैं। आज सार्वजनिक जीवन में रिश्वतखोरी और भाई–भतीजावाद के चलते शिक्षण जैसा पवित्र और दायित्वपूर्ण कार्य अपात्र और अयोग्य हाथों में आ गया है। ऐसे अध्यापकों का आचरण दोषपूर्ण और अविश्वनीय होता है। शिक्षण उनके लिए मात्र आजीविका का साधन है। शिष्य के मन में गुरूजनों के प्रति असम्मान का यह मुख्य कारण है।

सरकार ने शिक्षण संस्थानों में शारीरिक दण्ड का निषेद कर दिया है फिर विद्यार्थी अनुशासन का पालन क्यों करे। तुलसीदास ने कहा भी है ''भय बिनु होई न प्रीति''। इसका उदाहरण सन् 1975 में लगा देश में राजनीतिक आपातकाल है। 9 मास के आपातकाल के दौरान पहली बार ऐसा हुआ, जब न तो कोई हड़ताल हुई, न परीक्षाओं का बहिष्कार हुआ और न ही छात्रों ने कोई विध्वंसक कार्य किया। राजनीतिक नेता भी अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति के लिए छात्रों का इस्तेमाल करते हैं। विद्यार्थियों में अनुशासन की भावना जागृत करने के लिए सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन की आवश्यकता है। उसमें नैतिकता और सदाचार का समावेश किया जाए। उसे रोजगारोन्मुखी बनाकर छात्र शक्ति का सही उपयोग किया जाए। अध्यापक चयन प्रक्रिया को नैतिक बनाया जाए। ताकि इस क्षेत्र में सच्चरित्र और योग्य व्यक्ति आ सकें। तकनीकी, विज्ञान, वाणिज्य और मानविकी विषयों के साथ देश की भाषाओं के साहित्य को पढ़ाने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

साहित्य और समाज

उतर–2

साहित्य हित साधन है-साहित्य और समाज के सम्बन्ध पर विचार करते हुए हमें साहित्य एवं समाज के स्वरूप के ऊपर भी विचार करना पड़ता है। विद्वानों ने बतलाया है कि साहित्य शब्द का एक अर्थ– 'हित के साथ' अर्थात् हित करने वाला भी है। साहित्य में साहित्य को रचने वाले और साहित्य पढ़ने वाले की मंगल कामना करती है (रहती है)। साहित्यकार साहित्य का सृजन 'स्वान्तः सुखाय' करे या 'बहुजन सुखाय' उसका अपना सुख दोनों अवस्थाओं में इसमें सम्मिलित रहता है। साहित्यकार के लिए सृजन का सुख, अभिव्यक्ति का सुख, उपलब्धि का सुख अपने आप में महत्वपूर्ण है। कोई भी वस्तु हितकारी तभी होती है जब हमारे मनोरंजन के काम आए या फिर हमारी रक्षा करे। साहित्य दोनों रूपों में हमारी और समाज की भलाई करता है। स्वस्थ मनोरंजन के साथ साथ सामाजिक जीवन को सुखमय बनाने का काम साहित्य करता है।

साहित्य और समाज अभिन्न हैं- साहित्य और समाज बाल सहचर हैं। किसी धुंधले अतीत में मनुष्य ने जब मनुष्य समाज की नींव डाली होगी, तभी उसे भाषा की आवश्यकता पड़ी होगी। भाषा का लक्ष्य भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति में सहयोग देना है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के साथ साथ भावना प्रधान प्राणी भी है। समाज में रहते हुए उसने दुख–सुख, हर्ष विस्मय, शोक, भय की असंख्य अनुभूतियों को समेटना प्रारंभ किया होगा और उनकी अभिव्यक्ति करने की इच्छा भी उसके मन में जगी होगी। यही साहित्य का आधार है। समाज में रहते हुए वैयक्तिक या सामूहिक सुख–दुःख की अभिव्यक्ति की प्रेरणा से ही साहित्य ने जन्म लिया होगा।

साहित्य का लक्ष्य समाज है- साहित्य मानव जाति के संचित ज्ञान–कोष को कहते हैं। साहित्य में किसी जाति या समाज का सम्पूर्ण जीवन अभिव्यक्ति पाता है। साहित्य समाज में रहने वाले सामाजिकों द्वारा लिखा जाता है। साहित्य की प्रेरणा भी समाज से मिलती है और उसका लक्ष्य भी समाज ही होता है। इस प्रकार समाज से कट कर साहित्य रचना की कल्पना करना असम्भव है। साहित्य, सभ्य सामाजिक चेतना सम्पन्न लोगों के लिए है। साहित्य रचना के पीछे मूल प्रेरणा यही रहती है कि व्यक्ति अपने मनोभावों को सुन्दर ढंग से लोगों तक पहुंचाए।

साहित्यकार का उपदेश 'कान्ता-सम्मत' होता है- साहित्य का लक्ष्य सस्ते मनोरंजन से लेकर समाज सुधार एवं जातीय उत्थान तक का गम्भीर कार्य हो सकता है। साहित्यकार साहित्य सृजन करते समय, धन, यश, पद, मान–सम्मान पाने के लिए भी लालायित हो सकता है और मात्र परोपकार की भावना से भी साहित्यकार जातीय स्वाभिमान को जागृत कर सकता है, समाज में फैली निराशा को मिटा कर उसमें आशा का संचार कर सकता है, नई स्फूर्ति भर सकता है और साथ ही समाज को महानतम कार्यों के लिए प्रेरित कर सकता है। साहित्यकार मात्र उपदेश नहीं देता, उसका उपदेश 'कान्ता सम्मत' अर्थात् पत्नी के वचनों की तरह प्रिय भी होता है। इसलिए अधिक प्रभावशाली भी होता है।

समाज भावात्मक सम्बन्धों की उपज और साहित्य उनकी अभिव्यक्ति है- साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से जो कुछ समाज को देता है वह मौलिक होते हुए भी समाज से प्रभावित होता है। समाज क्या है? मैकाइवर ने समाज को 'मानवीय सम्बन्धों का ताना–बाना कहा है।' समूह या भीड़ से समाज नहीं बनता, उसके लिए पारस्परिक सम्बन्धों की आवश्यकता होती है। सम्बन्धों का मूल आधार तो रागात्मक सम्बन्ध ही है। भले ही भौतिकिवादी विचरक सम्बन्धों का आधार आर्थिक शक्तियों को स्वीकार करने लगे हैं। यदि आर्थिक सम्बन्ध ही शक्तियों के लिए नियामक होते हैं तो छोटे–छोटे पक्षी अपने बच्चों को क्यों पालते? पशुओं एवं पक्षियों में भी अपनी संतान या अपने समूह के लिए त्याग करने की कथाएं प्रचलित हैं। सभी सम्बन्धों का बना रहना तभी सम्भव है जबकि भावनात्मक दृष्टि से लोग आपस में जुड़े हों। साहित्य मूलतः रागात्मक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति का साधन है। इसलिए मानवीय संबंधों की विविधता चित्रित करने के लिए साहित्य का प्रयोग होता है। साहित्य समाज के भावात्मक जीवन का भी दर्पण होता है।

साहित्य के बिना समाज का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है- साहित्य और समाज का संबंध इतना घनिष्ठ है कि एक के बिना दूसरे का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। जिस समाज के पास अपना कोई साहित्य नहीं है, यह मानना पड़ेगा कि उस समाज के पास अपनी ज्ञान राशि को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने का कोई साधन नहीं है। वह समाज सभ्य भी नहीं हो सकता क्योंकि निश्चित आदर्श की स्थापना वहां नहीं हो सकती। साहित्य विहीन समाज की कल्पना भी असम्भव है क्योंकि मानवीय सुख–दुख की अभिव्यक्ति की ललक हर प्राणी में होती है। इतिहास साक्षी है जब मनुष्य असभ्य था, भाषा से उसका परिचय नहीं हुआ था तब भी वह अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए गुफाओं की दिवारों पर नुकीले पत्थरों से शिकार के चित्र बनाता था। भाषा के विकास के साथ–साथ सूक्ष्म मनोभावों की अभिव्यक्ति संभव हो सकी है। साहित्य, समाज को अभिव्यक्त ही नहीं करता बल्कि रूपाकार भी देता है। साहित्यकार जिस समाज में पैदा होता है, जिस जाति के आदर्शों एवं संस्कारों से प्रेरित रहता है, जिस राष्ट्र के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करता है, वह उसे सुधारने, संवारने और नया रूप देने का प्रयास भी करता है। महान साहित्यकार वही होता है जो कि भविष्य दृष्टा और आने वाले युग की आवश्यकताओं

को समझने में समर्थ है। लुइस चौदहवें के दमनकारी शासन की चक्की में पिसते फ्रांसिसी नागरिकों को रास्ता दिखाने के लिए रूसों एवं वाल्टेयर जैसे साहित्यकारों की आवश्यकता पड़ी। रूसों के बिना फ्रांसीसी क्रान्ति सम्भव नहीं थी। वाल्टेयर ने हंसते हंसते दमनकारी शक्ति का विनाश कर दिया।

नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता

उतर–3

भूमिका : स्वामी विवेकानन्द का कथन है कि ''शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं, बल्कि मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है, उसे प्रत्यक्ष करना ही शिक्षा का कार्य है।'' शिक्षा या विद्या ही वह साधन है जिससे मनुष्यता का विकास होता है। शिक्षा शून्य व्यक्ति पशु समान ही होता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य, उचित–अनुचित का निर्णय करने में सक्षम बनता है।

प्राचीन शिक्षा पद्धति : प्राचीन शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य व्यक्ति का आत्मिक और शारीरिक शक्ति का समुचित विकास करना था। उसके अन्दर सत् और असत् का विवेक जागृत करना था। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की बुद्धि का परिष्करण और परिमार्जन करते हुए उसके अंदर आत्मसंयम कर्त्तव्यनिष्ठा, धैर्य, सहनशीलता, सत्य तथा उपग्रह जैसे मानवीय गुणों को उत्पन्न करना था। उस समय शिक्षित होने का अर्थ, ही नीतियुक्त व न्यायपूर्ण होना था। 'शिक्षा' के साथ 'नीति' या 'नैतिक' शब्दों का प्रयोग करना दो पर्यायवाची शब्दों का एक साथ प्रयोग करना था। उस काल में विद्यार्थी नगर–ग्राम से दूर वन प्रदेशों में स्थित गुरूकुलों और आश्रमों में विद्यार्जन करता था। विद्यार्थी 25 वर्ष तक पूर्णब्रह्मचार्य का पालन करता था। गुरूजनों की सेवा करते हुए वह धर्म दर्शन, नीति, विज्ञान, चिकित्सा आदि विषयों का अध्ययन करके घर को लौटता था। इन आश्रमों में विद्यार्थी को चरित्र निर्माण, सदाचार और जीवन में उपयोगी बातों की शिक्षा दी जाती थी। उस समय भारत ज्ञान और शिक्षा का बहुत बड़ा केन्द्र था। यहाँ तक्षशिला और नालन्दा जैसे विश्वप्रसिद्ध शिक्षा–केन्द्र थे। धीरे–2 विदेशी आक्रमणकारियों ने यहाँ की राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था को छिन्न–भिन्न कर दिया। शिक्षा की गुरुकुल व्यवस्था भी नष्ट हो गई। संस्कृत का स्थान पहले फारसी तथा बाद में अंग्रेजों ने ले लिया।

वर्तमान शिक्षा पद्धति : वर्तमान शिक्षा पद्धति की नींव ब्रिटिश शिक्षाविद् लॉर्ड मैकले ने डाली थी। यह शिक्षा नीति भारतीय संस्कृति, परम्परा और राष्ट्रीय जीवन के विपरीत थी। यह विदेशी शासन को सुदृढ़ करने की एक चाल थी, जिसका उद्देश्य भारतीयों को शिक्षित करना नहीं, अपितु उनकी मानसिकता को नकलची और दास बनाना था। स्वयं मैकाले के शब्दो में मुझे विश्वास है कि इस शिक्षा योजना से भारत में एक ऐसा शिक्षित वर्ग बन जाएगा तो रक्त और रंग से तो भारतीय होगा पर रूचि, विचार, वाणी और मस्तिष्क से अंग्रेजी। दुर्भाग्य से मैकले की योजना आज शत्–प्रतिशत सफल हो गई है। भारतीय शिक्षा मूल्यविहीन और संस्कृति विमुख हो गई यही कारणहै कि उसके जीवन और चरित्र से भारतीय शिक्षा के आदर्श लुप्त हो रहे हैं। आज का भारतीय युवक उदण्डता, उच्छंखलता और अनुशासनहीनता का पर्याय बन चुका है। वह न तो माता–पिता की आज्ञा का पालन करता है और न ही गुरूजनों का सम्मान। गुरूजनों के प्रति उसके हृदय में वितृष्णा का भाव है। हिंसा, हड़ताल नारेबाजी, सामान्य कार्यक्रम बन गया है। पाश्चात्य संस्कृति व सभ्यता को वह स्वर्ग का द्वार समझता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति ने उसे अकर्मण्य और आलसी बना दिया है। उसे इस स्थिति में पहुँचाने के लिए नैतिक शिक्षा का अभाव उत्तरदायी है। यदि स्कूल–कॉलेजों में नैतिक शिक्षा का ज्ञान कराया जाए तो, भारतीय नवयुवक की यह

दशा नहीं होती।

नैतिक शिक्षा का अर्थ एवं आवश्यकता- नैतिक शिक्षा का अर्थ है नीति सम्बन्धी शिक्षा। मानव को उचित–अनुचित का ज्ञान करा कर आदर्श नीति सम्मत आचरण की प्रेरणा देने वाली शिक्षा नैतिक शिक्षा है। इसका अर्थ यह है कि हमारे स्कूल–कॉलेजों में विद्यार्थियों को सदाचार, संयम, विनम्रता, आचरण का आधार है। आज हमारे समाज में नैतिकता गूलर का फूल हो गई है। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए शोषण, अनाचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार, हिंसा, हत्या सब उचित हो गया है। निजी स्वार्थों में अन्धे होकर हम समाज और राष्ट्र की जड़ों को खोखला कर रहे हैं। इसका कारण यह है कि हमने अपनी शिक्षा–संस्थाओं में वाणिज्य, विज्ञान, तकनीक और कम्प्यूटर की शिक्षा की तो व्यवस्था की, किन्तु विद्यार्थियों को चरित्रवान कैसे बनाया जाए, इस बात पर ध्यान नहीं दिया। शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य–व्यक्ति निर्माण से हम भटक गए। इतिहास के नाम पर सिकन्दर के आक्रमण, गजनी–गौरी की लूटमार, औरंगजेब की धर्मान्धता और अंग्रेजों की षड्यंत्रकारी चालों के बारे में तो बताया जाता है लेकिन तेग बहादुर, गुरू गोबिन्द सिंह, पन्ना धाय और वीर हकीकत राय जैसे बलिदानियों के बारे में इतिहास मौन है। राष्ट्र भक्ति, गुरूजनों और माता–पिता के प्रति सम्मान, विनम्रता, सद्व्यवहार संयम और परोपकार की शिक्षा नहीं दी जाती। याद रखना चाहिए, चरित्रवान नागरिक किसी राष्ट्र की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति होती है।

नैतिक शिक्षा का स्वरूप : यदि हम अपने देश और समाज का उत्थान करना चाहते हैं तो हमें अपने शिक्षा–पाठ्यक्रमों में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य बनाना होगा। इसके लिए हमें प्राथमिक स्तर से ही बच्चों को सर्व धर्म समभाव का पाठ पढ़ाना चाहिए। उनके पाठ्यक्रमों में मर्यादापुरूषोत्तम श्री राम, श्री कृष्ण, महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध, महर्षि दयानंद, डॉ. हेडगेवार जैसी महान् विभूतियों के जीवन चरित्रों को सम्मिलित करना चाहिए। राष्ट्र –भक्ति पैदा करने के लिए सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्र शेखर आज़ाद, भगत सिंह जैसे वीर नायकों की यश गाथा बच्चों को पढ़ाई जानी चाहिए। भारत विभिन्न जातियों और भाषाओं का देश है। किन्तु सभी जातियां एक ही सांस्कृतिक धारा से जुड़ी हुई हैं। सभी भाषाओं के साहित्य में एक ही भाव धारा प्रवाहित हो रही है। ये सभी बातें बच्चों को आरम्भ से ही पढ़ाई जानी चाहिए। राष्ट्र जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में छाई अराजकता को नैतिक शिक्षा के द्वारा ही नियंत्रित किया जा सकता है।

अतः नैतिक शिक्षा को अविलम्ब प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालयी शिक्षा के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित कर लेना चाहिए।

प्रदूषण की समस्या एवं समाधान

अथवा

पर्यावरण की सुरक्षा

उतर–4

पर्यावरण से अभिप्राय उन प्राकृतिक पदार्थों से है जिनसे हमारा जीवन घिरा है। वायु, मिट्टी, जल, वृक्ष आदि मिलकर पर्यावरण में एक स्वाभाविक सन्तुलन स्थापित करते हैं। यह सन्तुलन अनेक बार प्राकृतिक कारणों और अधिकतर मानवीय कारणों से बिगड़ जाता है। मानव सभ्यता को आज सबसे बड़ा खतरा प्रदूषण से है। मनुष्य के आस–पास का समस्त वातावरण उसके प्रयोग में आने वाला जल–भण्डार, सांस लेने के लिए वायु, अन्न पैदा करने वाली धरती और यहाँ तक कि अंतरिक्ष का सारा विस्तार भी मनुष्य स्वयं दूषित कर रहा है।

पर्यावरण में चार प्रकार के प्रदूषण विद्यमान हैं:–

(1) वायु प्रदूषण (2) जल प्रदूषण (3) ध्वनि प्रदूषण एवं (4) प्रकाश प्रदूषण

वायुमंडल में तीव्रगति से प्रदूषण फैल रहा है। कार्बनडाइऑक्साइड की मात्रा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। एक समय ऐसा आ जाएगा जब सांस लेने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन नहीं मिलेगी। ट्रकों, कारों, बसों से निकलने वाले धुएँ से कैंसर आदि रोग भयानक रूप धारण कर चुके हैं। जल साधन सीमित हैं और गन्दगी बढ़ती जा रही है। भारत की नदियाँ, गन्दे नालों और कारखानों की गन्दगी को ढोती जा रही है। नदियाँ जहरीले रसायनों को समुद्र में डाल देती हैं। समुद्र में रहने वाले जीवों और वनस्पतियों को खतरा पैदा हो गया है।

ध्वनि प्रदूषण आधुनिक युग की समस्या है। ध्वनि का वेग विभिन्न माध्यमों में भिन्न–2 होता है। तेज ध्वनि हमारे कानों को हानि पहुँचा सकती है। बिजली के तेज प्रकाश के कारण आँखों और दिमाग के कोष क्षतिग्रस्त हो रहे हैं। औद्योगीकरण की अन्धी दौड़ में संसार का कोई भी राष्ट्र पीछे नहीं रहना चाहता। विलास के साधनों का उत्पादन भी खूब बढ़ाया जा रहा है। प्रतिवर्ष बारह हजार से भी अधिक नए रसायनों का उत्पादन पर्यावरण को जहरीला बना रहा है तथा रेगिस्तान बढ़ रहे हैं। गैसीय वायुमंडल से गुजरकर आने वाली वर्षा भी विषैली बन जाती है। धुएँ के बादल उगलने वाली मिलों का रासायनिक कचरा, पानी के द्वारा सीधे तौर पर हमारे शरीर में प्रवेश कर रहा है। आधुनिक युग में वृक्षों की कटाई से प्रदूषण की समस्या और भी गम्भीर हो गई है। पेड़–पौधे हमारे बहुत उपयोगी साथी हैं क्योंकि वे कार्बनडाइऑक्साइड को अवशोषित करके मानव के लिए ऑक्सीजन छोड़ते हैं। विष पीकर वृक्ष हमें अमृत देते हैं भगवान द्वारा प्रदान वृक्ष रूपी वरदान को हम अभिशाप में बदल रहे हैं।

आज के युग में जो खेती का मशीनीकरण हो रहा है, उससे भी पर्यावरण का प्रदूषण बढ़ रहा है। खेती से अधिकाधिक उपज लेने के लिए कीटनाशकों, रसायनों का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। इससे विश्व मानवता को भयानक खतरे का सामना करना पड़ रहा है। हाथों का स्थान मशीनें ले रही हैं। कुटीर उद्योग और लघु उद्योग नष्ट हो रहे हैं और भारी उद्योग बढ़ रहे हैं। शहरों में उद्योगों और भौतिकवाद के कारण गाँवों से भाग कर लोग शहरों में आ रहे हैं जिससे शहरीकरण की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। महानगरों के कूड़े–कचरे के ढेर गन्दी बस्तियों और आपार भीड़ के कारण प्रदूषण की समस्या को बढ़ावा मिला है। औद्योगीकरण ने हमारे रहन–सहन में जो बनावटीपन पैदा कर दिया है उससे भी प्रदूषण को बढ़ावा मिला है। बसों, मोटरकारों और स्कूटरों ने लोगों में दिखावे की भावना को बढ़ाया है। डिब्बाबन्द दूध, फल, रस और वनस्पति तेल और दिमागी तनावों तथा अनेक प्रकार के आधुनिक रोगों को दूर करने वाली औषधियों के निर्माण से हमारे दिल–दिमाग पर बुरा प्रभाव तो पड़ा ही है। हमें यह नहीं समझना चाहिए कि प्रदूषण केवल हवा, पानी और खाद्य पदार्थो में ही पैदा हुआ है। आज तो वास्तव में जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नही है। पर्यावरण के प्रति भारतीय दृष्टि प्राचीनकाल से ही सचेत रही है। हमारे यहां आकाश, नदी, पृथ्वी, पर्वत, सागर, वृष्टि, वनस्पति और औषधियाँ सभी देवतुल्य पूजनीय रही हैं। प्रकृति और मानव में सन्तुलन स्थापित करने के लिए ही पूज्य–पूजक भाव ही हमारी मूल्यवान परम्परा रही है। पर्यावरण को प्रदूषण की समस्या से बचाने के लिए और अंतर्राष्ट्रीय– राष्ट्रीय संस्थाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इस सारे प्रदूषण से बचने का एकमात्र उपाय है–विवेक। प्रकृति के प्रति अपनत्व और निकटता का भाव पैदा करना होगा तो भी यह समस्या बहुत हद तक हल हो सकती है। आज इस बात की जरूरत है कि हम अजन्में प्रदूषण को पैदा न होने दें और बढ़े हुए प्रदूषण को कम करने का प्रयत्न करें।

हिमाचल और पर्यटन

उत्तर–5

प्रकृति का मनोरम क्रीड़ास्थल हिमाचल, हिमालय की गोद में बसा अत्यंत प्राचीन क्षेत्र है। भू–शास्त्रियों के अनुसार 15,000 से 20,000 ई. पू. किन्नौर, लाहौल स्पिति और चौपाल आदि क्षेत्र पूरा मध्य सागर के भाग थे जिसके भरने से क्रमशः यह क्षेत्र बना। हिमाचल में पांच बड़ी पर्वत श्रृखलाएं– शिवालिक, धौलाधार, पीरपंजाल, वृहद् हिमालय तथा जसकर हैं। हिमाचल की धरती से भारत की पाँच बड़ी नदियां गुज़रती हैं जो हैं– सतलुज, व्यास, रावी, चिनाव तथा यमुना। हिमाचल की असंख्य झीलों में खजियार, रिवालसर, रेणुका, चन्द्रमोहन तथा मणिमहेश प्रसिद्ध हैं। हिमाचल का वर्तमान क्षेत्र 55,673 km है जो भारत के कुल क्षेत्र का 1.7 % है। हिमाचल में गर्म पानी के अनेक स्त्रोत हैं जिनमें मणिकरण (कुल्लू), कसोल (कुल्लू–भुंतर), वशिष्ट (कुल्लू) तथा जियोरी (किन्नौर) के स्त्रोत प्रसिद्ध हैं।

हिमाचल अत्याधिक प्राचीन है। वैदिक काल में हिमाचल के किरात राजा शम्बर ने आर्य राजा दिवोदास के साथ चालीस वर्ष तक युद्ध किया। ऋषि भारद्वाज, दिवोदास के प्रमुख सलाहकार थे। हिमाचल की दक्षिणी और पूर्वी ढलानों बसे कोली, हाली और डोम लोग दक्षिण से आकर बसे। वैदिक काल में विदेशी आक्रान्ताओं की दूसरी लहर भोट और किरातों के रूप में आई। उत्तर पश्चिम से हिमालय में प्रवेश करने वाले 'खस' आर्य थे। उत्तर पूर्व से आकर 'किरात' हिमाचल में बसे। हिमाचल में सदियों से अनेक संस्कृतियों का मिलन होता रहा है। यह वह प्रदेश है जहां पर हिड़िम्बा का मंदिर भी है और असंख्य देवी–देवताओं, ऋषि–मुनियों का विश्राम स्थल भी। विश्व का प्राचीनतम गणतन्त्र मलाणा कुल्लू में है जहाँ आज भी प्राचीन शासन–व्यवस्था देखी जा सकती है।

हिमाचल का गठन 1948 में हुआ और इसका क्षेत्रफल 27,169 किलोमीटर था। 1954 में बिलासपुर राज्य इसमें मिल गया और 1966 में हिमाचल का पुर्नगठन हुआ और पंजाब के पहाड़ी क्षेत्र हिमाचल को मिल गए। अब इसका क्षेत्रफल 55,673 किलोमीटर है। 25 जनवरी 1971 को हिमाचल को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला।

1991 की जनगणना के अनुसार हिमाचल की जनसंख्या 51,70,877 थी। 2001 में यह 60 लाख से अधिक थी। 1991 में हिमाचल के 63.54% लोग साक्षर थे। आर्थिक दृष्टि से हिमाचल के साधन सीमित हैं। प्रदेश का अधिकांश भाग पहाड़ी है। जीवन कठिन है। जलवायु अनेक स्थानों पर कठोर है। यहाँ के परिश्रमी लोग अपने राज्य के आर्थिक विकास में लगे हैं। लघु–उद्योगों और बागवानी के विकास से ही हिमाचल उन्नति करेगा। यहां के 63.2% लोग खेती–बाड़ी में लगे हैं। हिमाचल में जनजातियों की कुल जनसंख्या का 4.22% तथा अनुसूचित जातियों की जनसंख्या 25.34% है। आई.आर.डी.पी. के अंर्तगत आने वाले निर्धन परिवार के मुखिया की मृत्यु पर 5000 रुपए का सरकारी अनुदान दिया जाता है। बूढ़े माँ–बाप की देखभाल करना कानूनी दृष्टि से अनिवार्य बना दिया गया है।

हिमाचल में व्यास तथा बाणगंगा के तट पर तथा कांगड़ा में देहरा तथा गुलेर में पुरातत्वविद् वी.वी. लाल ने 1955 में खोज कार्य कर यह सिद्ध किया कि इस क्षेत्र में मनुष्यों ने प्राथमिक मानवीय विकास के समय से ही रहना प्रारंभ कर दिया था। अनुमानितः 3000 ई. पू. से 1500 ई.पू. तक सिन्धु घाटी के लोगों के गांगेय क्षेत्र में बसे मुण्डाभाषी कोलरियन जाति को हिमालय क्षेत्र की ओर धकेल दिया था। ये लोग जंगलों में बस गए और दस्यू कहलाए। उत्तर वैदिक साहित्य में इन्हें किन्नर, दक्ष और नाग नाम से पुकारा गया है। इतिहासकार मानते हैं कि

हिमाचल के मूल निवासी कोल थे। पश्चिम हिमालय में बसे कोली, हाली, डोम आदि हैं तथा शम्बर इनका सबसे शक्तिशाली शासक था। लाहौल स्पिति में बसे भोट और किरात मंगोलियन हैं। मध्य युग में अनेक राजपूत हिमालय में आकर बसे। मुस्लिम आक्रान्ता भी कश्मीर की ओर से हिमाचल में आए। हिमाचल के छोटे–छोटे रजवाड़े प्रायः स्वतंत्र रहे। कभी कभार मुगल, अंग्रेज, गोरखों तथा सिक्खों ने इसके कुछ भागों पर अधिकार अवश्य जमाया परंतु वह ज्यादा दिन चल न सका।

हिमाचल में अनेक बोलियां बोली जाती हैं जोकि पश्चिमी पहाड़ी में आती हैं। प्राचीनकाल में पहाड़ी भाषा फारसी, खाची, टांकरी में लिखी जाती थी। आजकल देवनागरी में लिखी जाती है। लाहुली, किन्नौरी, चम्बाली, कुल्लवी, कांगड़ी, मंडयाली, बघाटी, सिरमौरी तथा महासुवी यहां की प्रमुख बोलियां हैं। हिमाचल सामूहिक लोक–नृत्यों के लिए प्रसिद्ध है। किन्नौर में राक्षस क्यांग–वक्यांग, जातरूक्योग तथा छोहरा नृत्य होते हैं। लाहौल में शांद, चम्बा और झांझर, कुल्लू, सिरमौर, शिमला तथा चम्बा में नाटी नृत्य प्रसिद्ध है। झूरी, घी, रास तथा बुराह नृत्य सिरमौर में प्रचलित है। कुल्लू घाटी में खरेत, फिल्ली, फेटी, लूड़ी वन्थड़ा आदि नृत्य प्रचलित हैं।

हिमाचल के मेलों में वैशाखी (विशू), मिंजर (चम्बा), दशहरा (कुल्लू), लवी (रामपुर), रेणुका (नाहन), शिवरात्रि (मण्डी), नलवाड़ी (बिलासपुर) प्रसिद्ध हैं। भरमौरी यात्रा, छितराड़ी यात्रा, रोहडू यात्रा, रामपुरी यात्रा तथा फूल यात्रा भी प्रसिद्ध हैं।

हिमाचल में शादी की अनेक विधियां प्रचलित हैं। परित्यकता के साथ विवाह झंजराड़ा विधि से होता है। जलती झाड़ी के चारों ओर चक्कर लगा कर होने वाली शादी 'बराड फुक' या झिण्डीफुक' कहलाती हैं। झाजर, गाड्डर या परैणा विधि की शादी में दुल्हा, दुल्हन के घर नहीं जाता। उस के सम्बंधी दुल्हन को विदा करके लाते हैं। हिमाचल के मध्य भाग में 'वर' विधि द्वारा भी विवाह होता है जिसमें दुल्हा, दुल्हन को भगा ले जाता है और शादी करता है।

हिमाचल निश्चय ही अद्‌भुत लोक–परम्पराओं, संस्कृतियों, जातियों नाच–गानों, कलाओं और त्यौहार मेलों का प्रदेश है।

प्र.4 छात्रवृत्ति प्राप्त करने अथवा आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए प्रधानाचार्य को निवेदन–पत्र लिखिए।

उत्तर

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय

रा0व0मा0 पाठशाला,

क0ख0ग0।

श्रीमान जी,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में 10+2 कक्षा का छात्र हूं। अब तक मैं स्कूल में प्रथम आता रहा हूँ। गत वर्ष मैंने 85% अंक प्राप्त किए थे। पढ़ाई के साथ–साथ मैं खेलों में भी आगे रहा हूँ।

मान्यवर, इस वर्ष मेरे पिता जी का व्यवसाय ठपप हो गया है। घर की आर्थिक स्थिति कमज़ोर हो गई है। मेरे पिता जी इस वर्ष मेरी पढ़ाई का खर्च नहीं उठा सकते। अतः आपसे निवेदन है कि मुझे इस वर्ष 250 रुपए

मासिक की छात्रवृत्ति प्रदान करें ताकि मैं अपनी पढ़ाई सुचारू रूप से कर सकूँ। इस कृपा और सहयोग के लिए मैं आपका कृतज्ञ रहूँगा।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

रोल नं0......................

कक्षा 10+2

दिनांक.............................

अथवा

अपने मोहल्ले में बढ़ती चोरियों एवं अपराध की रोकथाम के लिए जिला प्रशासन अधिकारी अथवा थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

उत्तर

सेवा में,

जिला प्रशासन अधिकारी

जिला................

महोदय,

मुझे अत्यन्त खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि पिछले कुछ सप्ताह से हमारे शान्ति–भरे इलाके में चोरी, डकैती, राहगीरों से छीना–झपटी आदि की समस्याएँ आम हो गई हैं। राह चलते लोगों से सामान छीन लेना तथा महिलाओं के गले से चेन आदि खींच कर अपराधी भाग जाते हैं। स्कूल, कॉलेज जाने वाली लड़कियों के साथ छेड़छाड़ की अनेक घटनाएँ घट रही हैं। पेशेवर अपराधी तो यह काम करते ही हैं, मगर आजकल अच्छे घरों के लड़के भी अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उक्त अपराध करते हैं। यह बड़ी ही चिन्ता का विषय है। मगर प्रशासन इस ओर कोई खास ध्यान नहीं दे रहा है।

औरतों से चेन छीनने की घटनाएँ पिछले कुछ महीनों में कई बार हो चुकी हैं। यदि इसी प्रकार से अपराध बढ़ते रहे और अपराधियों को न रोका गया तो लोगों का जीवन कठिनाइयों से भर जाएगा। आशा है अपराधियों को जल्दी ही दण्डित किया जाएगा तथा लोगों की सुरक्षा को और कड़ा किया जाएगा।

धन्यवाद

भवदीय

क0ख0ग0

305 सैक्टर–14,............

दिनांक.....................

प्र.5 इंटरनेट पत्रकारिता क्या है? इसके स्वरूप और इतिहास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

इंटरनेट पर समाचार–पत्रों को प्रकाशित करना एवम् समाचारों का आदान–प्रदान करना ही इंटरनेट पत्रकारिता है। इंटरनेट पर किसी भी रूप में समाचारों, लेखों, चर्चा, परिचर्चाओं, वाद–विवादों, फीचर, झलकियों, डायरियों के माध्यम से अपने समय की धड़कनों को महसूस करने और दर्ज करना ही इंटरनेट पत्रकारिता है। प्रकाशन समूह और निजी कम्पनियाँ इंटरनेट पत्रकारिता से जुड़ी हुई हैं। इंटरनेट पत्रकारिता सूचनाओं को

तत्काल उपलब्ध कराता है। विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता इस समय तीसरे दौर पर है। पहला दौर 1982 से 1992 तक तथा दूसरा दौर 1993 से 2001 तक चला। तीसरा दौर 2002 से अब तक है। प्रारम्भ में इंटरनेट का प्रयोग धरातल पर था। बड़े प्रकाशन समूह समाचार–पत्रों की उपस्थिति सुपर इन्फार्मेशन हाईवे पर चाहते थे।

इस दौरान कुछ चर्चित कम्पनियों जैसे ए0ओ0एल यानि अमेरिका ऑन लाइन सामने आई। यह दौर प्रयोगों का दौर था। वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता की शुरूआत 1983 से 2002 के बीच हुई। इस समय में तकनीक से स्तर पर इंटरनेट का बहुत विकास हुआ। इसी बीच नई वेब भाषा एच.टी.एम.एल. (हाइपर टेक्सट मार्क्डअप लैंग्वेज) आई। इंटरनेट ई–मेल, आया, इंटरनेट एक्सप्लोरर और नेटस्केप नाम से ब्राउजर में इंटरनेट को सुविधा संपन्न और तेज रफ्तार बना दिया। न्यू मीडिया के नाम पर डॉट कॉम कम्पनियाँ सम्पर्क में आईं। इंटरनेट और डॉट कॉम चर्चा का विषय बन गए। इससे जनता रातों–रात अमीर बनने के सपने देखने लगी। जितनी तेज़ी के साथ ये कम्पनियां उभरी उतनी ही तेज़ी के साथ यह कंपनियां गिरीं भी। सन् 1996 से 2002 के बीच अमेरिका के पाँच लाख लोगों को डॉटकाम की नौकरियों से धक्का लगा। विषय सामग्री और पर्याप्त आर्थिक आधार की कमी के कारण लगभग डॉटकॉम कम्पनियां बंद हो गई। बड़े प्रकाशन समूहों ने इस दौरान स्वयं को नहीं गिरने दिया। जनसंचार के क्षेत्र में चाहे परिस्थितियाँ जैसी भी हों, सूचनाओं के आदान–प्रदान करने में इंटरनेट किसी से कम नहीं इसका महत्व हमेशा बना ही रहेगा। वास्तव में इंटरनेट पत्रकारिता का 2002 से शुरु हुआ तीसरा दौर ही वास्तविक अर्थों में टिकाऊ हो सकता है।

अथवा

समाचार लेखन के छः ककारों के बारे में संक्षेप में बताओ।

उत्तर

किसी भी समाचार को लिखने के लिए छः प्रश्नों का उत्तर आवश्यक माना जाता है। क्या हुआ, किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ, कब हुआ, कैसे हुआ और क्यों हुआ? इन्ही छः प्रश्नों का दूसरा नाम ककार है। इन्ही छः ककारों को ध्यान में रख कर ही किसी घटना, समस्या और विचार आदि से सम्बन्धित खबर लिखी जाती है।

समाचार के आरम्भ में जब पैराग्राफ लिखना शुरू किया जाता है तब शुरू की दो–तीन पंक्तियों में 'क्या', 'कौन', 'कब', और कहाँ? इन तीन या चार ककारों को आधार बनाकर समाचार लिखा जाता है। उसके पश्चात् समाचार के मध्य में और समापन से पूर्व 'कैसे' और क्यों जैसे ककारों का उत्तर दिया जाता है। इस तरह इन छः ककारों को ध्यान में रखकर समाचार लिखा जाता है। पहले चार ककारों का प्रयोग सूचना और तथ्यों के लिए किया जाता है। परन्तु 'कैसे' और 'क्यों' ककारों द्वारा विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलुओं पर बल दिया जाता है। इस प्रकार समाचार लेखन की पूरी प्रक्रिया में इन छः ककारों का विशेष महत्व है।

प्र.6 **कविता-लेखन से सम्बन्धित दो मत क्या हैं?**

उत्तर

कविता–लेखन से संबंधित दो विभिन्न मत प्रचलित हैं। पहला मत तो यह है कि कविता लिखने की कोई प्रणाली सिखाई या बताई नहीं जा सकती। यह तो मानव की संवदेनाओं से जुड़ी है। इसे चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला आदि की तरह सिखाया नहीं जा सकता। चित्रकला में रंग, कूची कैनवास आदि होते है। तो संगीत में

स्वर, ताल और वाद्य उपकरण होते हैं। इन उपकरणों की सहायता से इन कलाओं को सिखाया जा सकता है, किन्तु कविता में किसी बाह्य उपकरणों की सहायता नहीं ली जा सकती। कवि तो अपनी इच्छानुसार मन में उठने वाले शब्दों को जुटाता है और उसे लय में पिरोकर कविता की रचना करता है। इसे किसी को सिखाया नहीं जा सकता।

कविता–लेखन से संबंधित दूसरा मत यह है कि अन्य कलाओं की भान्ति कविता–लेखन को भी सिखाया जा सकता है। पश्चिमी देशों और भारत के कुछ विश्वविद्यालयों में भी कहीं–कहीं काव्य–लेखन से संबंधित प्रशिक्षण दिया जा रहा है। चित्रकला, संगीतकला और नृत्यकला के समान कविता को भी सीखा जा सकता है। किसी भी कविता के विषय में जानना और बार–बार उसे पढ़ने से कवि की संवेदनाओं के काफी निकट पहुँचा जा सकता है। इस मत के मानने वालों का कहना है कि उचित प्रशिक्षण पाकर कविता–लेखन सरलता से किया जा सकता है।

अथवा

नाटक किसे कहते हैं? इसकी भाषा शैली कैसी होनी चाहिए?

उत्तर

भारतीय काव्य–शास्त्र में नाटक को दृश्य–काव्य माना गया है। इस आधार पर नाटक साहित्य की ऐसी विद्या है जो पाठ्य होने के साथ–साथ देखी भी जा सकती है। नाटक संवाद–प्रधान प्रस्तुति होती है। सफल एवम् श्रेष्ठ नाटक वही माना जाता है जो अभिनय के साथ–साथ पठनीय भी होता है। अभिनेता का गुण ही नाटक को साहित्य की अन्य विधाओं से अलग करता है। नाटक को सम्पूर्णता रंगमंच पर सफल हो जाने पर ही मिलती है। इसलिए कह सकते हैं कि नाटक साहित्य की वह विद्या है जिसे पढ़ा, सुना और देखा जा सकता है। विभिन्न अभिनेताओं के द्वारा एक निर्देशक द्वारा निर्देशित तथा अन्य रंगकर्मियों की सहायता से इसे दर्शकों के लिए रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है।

नाटक की भाषा शैली-नाटक की रचना मुख्य रूप से रंग मंच पर प्रस्तुत करने के लिए की जाती है। इसलिए इसकी भाषा सहज, स्वाभाविक तथा प्रसंगानुकूल होनी चाहिए। यदि नाटक में चित्रित परिवेश पौराणिक है तो इसकी भाषा तत्सम प्रधान हो सकती है। इसी प्रकार से मुग़लकालीन वातावरण में रचित नाटकों में उर्दू शब्दों का अधिक प्रयोग देखा जा सकता है। आधुनिक काल के नाटकों में खड़ी बोली के साथ–साथ लोक प्रचलित अंग्रज़ी, उर्दू, अरबी–फ़ारसी आदि भाषाओं के शब्दों का सहज रूप से प्रयोग प्राप्त होता है। नाटक की भाषा कोई भी क्यों न हो यदि वह नाटक में चित्रित परिवेश के अनुसार है तो उसकी संप्रेषणीयता में किसी प्रकार की भी कठिनाई नहीं आती है। दर्शक स्वयं को नाटक में चित्रित परिवेश के साथ ताल–मेल बैठा कर नाटक के संवादों का पूर्ण रसास्वादन कर लेता है।

प्र.7 **निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या :**

उत्तर

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक अन्तरा भाग–2 के अंतर्गत सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित ''सरोज–स्मृति'' में से लिया गया है। इस शोक गीत में निराला अपनी बेटी के दुःखमय जीवन की झलक प्रस्तुत करते है–

व्याख्या- कवि 'निराला' जी कहते हैं कि मेरी बेटी, बिन माँ की थी, उसकी माँ की मृत्यु बहुत पहले हो चुकी थी। इसलिए विवाह के अवसर पर ससुराल के लिए विदाई के समय जो शिक्षा बेटी को माँ देती है, परिवारिक मर्यादाओं की रक्षा की वह शिक्षा भी मुझे ही देनी पड़ी। मेरी बेटी की कोई सहेलियां नहीं थी, न कोई सम्बन्धी आए थे इसलिए उसकी सुहाग–सेज भी फूलों से मैंने ही सजाई थी। मैंने सोचा कि मातृहीन मेरी बेटी सरोज भी शकुन्तला के समान थी जो पिता के पास पली थी। फिर कवि कहता है कि मेरी बेटी का व्यवहार और चरित्र, शकुन्तला से बिल्कुल भिन्न था। कुछ दिन तक प्रसन्नतापूर्वक ससुराल में रही और फिर अपनी नानी के घर गई हुई थी। मामा–मामी ने उसे वैसे ही प्यार दिया जैसे बादलों का जल धरती से भर देता है। हे बेटी! तुम्हारे ननिहाल के लोग ही तुम्हारी सेवा में लगे रहे। वे तेरे लिए सदा ही श्रम करते रहे। हे बेटी! तू वहीं जाकर खिली जहाँ की बेल अर्थात् तुम्हारी माँ थी। कहने का भाव यह है कि तुम्हें ननिहाल में असली सुख मिला। हे बेटी! तुमने अंतिम साँसें भी उसी ननिहाल में लीं जहाँ पर तुम्हारी माँ पैदा हुई थी। तुम्हें उस परिवार से अत्याधिक प्यार मिला था। तूने प्राण भी वहीं त्यागे।

विशेष–

(1) निराला द्वारा मातृहीन बेटी को कुल शिक्षा देना मार्मिक प्रसंग है।

(2) अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है।

(3) मुक्त छन्द का प्रयोग हुआ है।

(4) भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान है।

अथवा

उत्तर

प्रसंग- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग–दो के अंतर्गत विद्यापति द्वारा रचित ''पदावली'' में से लिया गया है। इसमें कवि ने विरहणी नायिका की करूण–दशा का चित्रण किया है।

व्याख्या- नायिका करूण पुकार करती हुई कहती है कि कौन ऐसा दयालु है जो उसकी चिट्ठी उसके प्रियतम तक पहुंचा देगा? वह कहती है कि सावन का महीना आ गया है और पति से बिछुड़ने का असह्य दुःख सह पाना अब सम्भव नहीं रहा। वह कहती है कि अब उससे अकेले घर पर नहीं रहा जाता, अकेलापन बहुत सताता है। वह अपनी सखी से कहती है कि किसी दूसरे के गहन दुःख को कोई पराया कैसे समझ सकता है। कहने का भाव यह है कि नायिका को कोई अपना दुःख बांटने वाला नहीं दिखता। वह कहती है कि कृष्ण मेरा मन हर कर ले गए हैं और अपना मन भी उनका, उन्हीं के पास है। अर्थात अपना मन भी वे अपने साथ ले गये। राधिका कहती है कि मेरे कृष्ण ने मथुरा में बसकर बहुत बदनामी पाई है। गोकुल के लोग उन्हें कृतघ्न ही मानेंगे। इतना प्यारा पाकर भी कृष्ण ने उनसे धोखा किया और उन्हें छोड़ गए। विद्यापति कवि गाते हुए कहते हैं कि 'हे युवती!' मन में विश्वास रखो, कार्तिक मास में तुम्हारा पति तुमसे अवश्य आ मिलेगा।

विशेष–

(1) सावन का महीना, वर्षा का होता है। इस माह में काम भाव अधिक जागता है। इसलिए विरहणियों के लिए विशेषकर कष्टदायक महीना होता है।

(2) पद की भाषा मधुर मैथिली है।

(3) करूण रस तथा वियोग श्रृंगार रस इस पद में है।

(4) प्रसाद गुण युक्त भाषा है।

प्र.8 **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर :**

(क) ''कार्नेलिया का गीत'' कविता में प्रसाद ने भारत की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है?

उत्तर प्रस्तुत कविता में प्रसाद ने भारत को एक सुन्दर देश कहा है। यहां का प्रभात अत्यन्त आकर्षक है क्योंकि सूर्य की पहली किरणें इसी देश पर पड़ती हैं। यह भारत देश मधुमय है। यह देश अनजान लोगों को भी आश्रय देता है। यहाँ मनुष्यों को ही नहीं पशु–पक्षियों को भी सहारा मिलता है। यहाँ के लोग दूसरों के दुःख से दुःखी होना जानते हैं अर्थात भारतवर्ष के लोग दयावान, करूणा से ओत–प्रोत व संवेदना के भाव रखते हैं।

(ख) '' खाली कटोरों में बसन्त का उतरना से क्या आशय है?

उत्तर बनारस शहर में बसन्त का आगमन अचानक होता है। यह बसंत बिना किसी खबर दिए आ जाता है। उसके आगमन पर बनारस धूल–धूसरित प्रतीत होता है। बनारस के घाटों पर तीर्थ यात्रियों की इंतजार में बैठे भिखारियों के खाली कटोरों में जब सिक्के गिरने लगते हैं तो उन्हें पता चल जाता है कि बसन्त आ गया। भिखारियों के लिए भीख का बहुतायत में मिलना ही बसंत के आगमन का सूचक है।

(ग) ''मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ'' में राम के स्वभाव की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर भरत जी कहते हैं कि वे अपने स्वामी राम जी के स्वभाव को अच्छी तरह पहचानते हैं। उनके अनुसार राम अत्याधिक दयालु, दूसरों की भावनाओं को समझने वाले, कभी क्रोध न करने वाले, अपराधियों पर भी दया दिखाकर उन्हें क्षमा करने वाले हैं। राम, अजातशत्रु हैं और सांप तथा बिच्छू तक उनके निकट आने पर अपना विषैला स्वभाव भूल जाते हैं।

(घ) देवी सरस्वती की उदारता का गुणगान क्यों नहीं किया जा सकता?

उत्तर कवि केशवदास स्पष्ट करते हैं कि सरस्वती की उदारता असीम है। उनकी उदारता के एक गुण का वर्णन करने में देवता, ऋषि–मुनी और बड़े–बड़े तपस्वी भी असमर्थ रहे तो मन्दबुद्धि मनुष्य तो चीज़ ही क्या है? सरस्वती की उदारता के गुण का वर्णन बहुत पहले से होता चला आ रहा है और आगे भी होगा। परन्तु उनकी उदारता का गुण वर्णन से परे है। यही नहीं ब्रह्मा, शिव और कार्तिकेय भी सरस्वती के इस गुण का वर्णन पूरी तरह नहीं कर पाए हैं। यह तो नित्य नए रूप में नया गुण प्रकट करती रहती है।

प्र.9 **निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य :**

हेम कुम्भ ले ———————————भर तारा।।

उत्तर उपर्युक्त काव्यांश में कवि जयशंकर प्रसाद जी ने यहां उषा को सुन्दर युवती के रूप में अंकित किया है। उषा सुबह सवेरे सोने का घड़ा अर्थात् सूर्य को लेकर आती है और उसकी सुनहली किरणों को भारत भूमि पर बिखेर देती है। दिन चढ़ने के साथ सूर्य मानो इस धरती पर सुख को ही उंडेलता है। सूर्य की रोशनी खुशियाँ लेकर आती है। सुनहरा प्रकाश उस समय फैलने लगता है जब कि आकाश में सितारे अभी ऊंघ रहे होते हैं अर्थात् मद्धम पड़ चुके होते हैं। कवि की कल्पना है कि सितारों का आलस इस कारण से होता है क्योंकि उन्होंने रातभर जाग कर आकाश को

चमकाया था।

'उषा' का मानवीकरण हुआ है। उषा को युवती के रूप में तथा तारों को पहरेदारों के रूप में चित्रित किया है। दोनों का मानवीकरण हुआ है। 'हेम कुंभ' में रूपक अलंकार है। भाषा सहज, सरल, प्रवाहमय तथा नाटकीय है। 'जब–जग' में अनुप्रास अलंकार है। पूरे पद में एक दृश्यबिम्ब उभरता है। भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान है।

अथवा

सिंधु तर्‌यो——————————गई न तरी।

उत्तर

मन्दोदरी इस छन्द में रावण से कहती है कि हे रावण! मुझे आश्चर्य है कि तुमने राम की महानता को अभी तक नहीं समझा। उनके तो एक वानर ने समुद्र पार कर लिया और वह तुम तक अर्थात लंका तक आ पहुंचा। तुम से तो लक्ष्मण द्वारा खींची गई धनुष की एक रेखा तक भी न पार की जा सकी। लंका का शासक पूरी ताकत लगाकर भी उस वानर को बांध कर नहीं रख सका। इसी से दोनों की शक्ति की तुलना की जा सकती है।

व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग हुआ है। तत्सम और तद्‌भव शब्दों का सहज प्रयोग हुआ है। वक्रोक्ति से भाव सौन्दर्य बढ़ा है। संवाद, शैली का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

प्र.10 निम्नलिखित कवियों का साहित्यिक परिचय

(क) **तुलसीदास**

जीवन परिचयः-भक्तिकाल के रामभक्ति धारा के महाकवि तुलसीदास का जन्म सन् 1532 ई. में उत्तर प्रदेश के राजापुर गाँव में हुआ था। माता का नाम हुलसी था जोकि बालक को जन्म देने के पश्चात् संसार से चल बसी। पिता आत्मा राम दूबे ने बालक को अभागा और अशुभ मानकर त्याग दिया। दासी मुनिया ने उनका पालन पोषण किया। तुलसीदास के बचपन का नाम 'बोला' था। उनका विवाह दीनबन्धु पाठक की पुत्री रत्नावली से हुआ। पत्नी की फटकार सुनकर तुलसी राम भक्ति की ओर उन्मुख हुए और उन्होंने सन्यास ले लिया। उन्होंने काशी, चित्रकूट और अयोध्या आदि तीर्थ स्थानों का भ्रमण किया। सन् 1574 ई. में अयोध्या में रहकर तुलसीदास ने प्रसिद्ध महाकाव्य ''रामचरितमानस'' की रचना प्रारंभ की किन्तु उनका कुछ अंश काशी में लिखा। काशी में रहते हुए सन् 1623 ई. को इनका निधन हुआ।

रचनाएँ- तुलसीदास की प्रामाणिक रचनाओं क संख्या 12 तक मानी जाती है। उनकी ख्याति प्राप्त रचनाएँ हैं—

महाकाव्य- रामचरितमानस

खण्ड काव्य- जानकी मंगल, पार्वती मंगल, रामललानेहछू

मुक्तक काव्य- गीतावली, दोहावली, कवितावली, कृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका, वैराग्य, संदीपनी, बरवै रामायण तथा रामाज्ञा प्रश्न।

काव्यगत विशेषताएँ/साहित्यिक विशेषताएं

समन्वयवादिता- तुलसी रामभक्ति के अनन्य अराधक एवं गायक थे। उनके काव्य की सबसे बड़ी विशेषता समन्वयवादिता है। उन्होंने अपने समय की सभी प्रचलित बोलियों, भाषाओं और दार्शनिक सिद्धान्तों का समन्वय

किया। समन्वयवादिता के कारण ही तुलसीदास लोकनायक कहलाए।

भक्तिभावना- तुलसी ने सगुण भक्ति धारा का मार्ग चुना। उनके आराध्य राम जन–जन के मन में वास करते हैं। वे ''विनय पत्रिका'' में लिखते हैं–

''राम से बड़ो है कौन, मोसौं कौन छोटो।
राम से खरो है कौन, मोसौं कौन खोटो।।''

''कृष्ण गीतवाली'' में कृष्ण के जीवन की मनोहारी झांकियाँ विद्यमान हैं।

सामाजिक उच्चादर्श- तुलसी ने अपने कृतित्व के माध्यम से उच्च सामाजिक आदर्शों की स्थापना की। उन्होंने राम के उदात्त एवं उच्च आदर्श के चरित्र को स्थापित कर जन–जन के लिए अनुकरणीय बना दिया। रामचरित मानस में सम्मिलित सब पात्र सामाजिक मर्यादाओं का जीता जागता आदर्श रूप हैं।

भाषा शैली- तुलसी ने अपने समय की प्रचलित सब भाषाओं का प्रयोग किया है। उन्होंने अपने काव्य में शुद्ध ब्रज और अवधी भाषा का सुन्दर प्रयोग किया है। यही नहीं तुलसी ने अपने समय की सभी काव्यशैलियों का एक समान सफल प्रयोग किया है। उन्हें अपने समय की प्रचलित लोकशैलियों एवं शास्त्रीय शैलियों का प्रयोग किया है। 'रामचरितमानस' में दोहा–चौपाई छन्द का प्रयोग किया है। तुलसी के काव्य में अनेक अलंकारों विशेषकर रूपक, उपमा तथा उत्प्रेक्षा का सुन्दर एवं सहज चित्रण हुआ है।

(ख) **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'**

जीवन परिचयः-सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला कवि, उपन्यासकार कहानीकार और निबन्ध लेखक ही नहीं बल्कि हिन्दी की नई काव्यधारा के प्रवर्तक और क्रांतिकारी विचारों के उन्नायक थे। निराला का जन्म सन् 1898 ई. में बंगाल के मेढिनीपुर जिले के महिषादल राज्य में हुआ था। इनके पिता पं. राम सहायक त्रिपाठी महिषादल राज्य के सामान्य कर्मचारी थे। तीन वर्ष की अल्पायु में ही इनकी माता का निधन हो गया। 14 वर्ष की आयु में इनका विवाह मनोहरा देवी से हुआ। निराला का परिवारिक जीवन कोई विशेष सुखी नहीं था। इनके परिवार में एक के बाद एक की मौत होती रही, परन्तु फिर भी ये विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करते रहे। आर्थिक संकटों से जूझते हुए इन्होंने कुछ दिनों तक नौकरी की। इसके अतिरिक्त ये कुछ समय तक 'समन्वय' और 'मतवाला' पत्र से भी जुड़े रहे। पुत्री सरोज के बड़े होने पर उसका विवाह किया परन्तु कुछ समय पश्चात ही उसका निधन हो गया। सरोज की मृत्यु ने तो उनके ह्रदय के टुकड़े–टुकड़े कर दिए। अपनी दानी और फक्कड़ प्रकृति के कारण ये आजीवन आर्थिक संकट से ग्रस्त रहे। अन्त में संघर्षों से जुझते हुए 15 अक्तूबर 1961 को निराला का देहान्त हो गया।

रचनाएँ- निराला बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने गद्य और पद्य में साहित्य–साधना की। अपने जीवन काल में उन्होंने दर्जन भर रचनाएँ लिखीं। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–

(क) खण्ड काव्य– तुलसीदास, सरोज स्मृति, राम की शक्तिपूजा।
(ख) मुक्तक काव्य– अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकरमुत्ता, अणिमा, बेला, नए पत्ते, अर्चना, अराधना, गीत–गुंज और सांध्य काकली।
(ग) उपन्यास–अप्सरा, अलका तथा प्रभावती।
(घ) कहानी संग्रह–लिलि, सखी, सकुल की बीबी।
(ङ) रेखाचित्र– कुल्ली भाट, विल्लेसुर बकरिहा।

(च) जीवनी– राणा प्रताप, ध्रुव, शकुन्तला और भीष्म आदि।

काव्यगत विशेषताएँ–

1. **वर्ण्य-विषय-** निराला के काव्य के विविध विषय हैं। तुलसीदास एक खण्ड काव्य के रूप में हैं। ''राम की शक्ति पूजा', एक लम्बी कविता है। सरोज स्मृति इनकी ऐसी कविता है जिसमें कवि ने अपनी व्यक्तिगत वेदना की अभिव्यक्ति की है। कुछ कविताएं प्रकृति चित्रण की हैं।

2. **प्रकृति-चित्रण**– निराला के काव्य में प्रकृति का सुन्दर वर्णन मिलता है। उनकी सबसे प्रसिद्ध कविता 'जूही की कली' प्रकृति–चित्रण का सुन्दर उदाहरण है।

3. **क्रान्ति का स्वर-** निराला एक सच्चे क्रान्तिकारी कवि थे। उनकी कविता में विद्रोह का स्वर प्रमुख है। 'वह तोड़ती पत्थर', 'भिक्षुक', कुकरमुत्ता' व्यंग्य प्रधान कविताएँ हैं। निराला जी ने अपनी रचनाओं में शोषण, अन्याय तथा उत्पीड़न का जमकर विरोध किया है। उन्होंने परम्परा से चले आए छन्दों के बंधन को तोड़ा था।

4. **नारी के प्रति नवीन दृष्टिकोण-** निराला ने काव्य में नारी के प्रति नया दृष्टिकोण अपनाया है। निराला काव्य में नारी कहीं तो संध्या सुंदरी के रूप में चित्रित हुई है तो कहीं यामिनी के रूप में उसका प्रेयसी रूप अंकित हुआ है।

5. **अतीत के प्रति मोह-** छायावादी कवियों की कविता में अतीत के प्रति मोह की भावना थी निराला का यह मोह उनकी विभिन्न कविताओं में अभिव्यक्त हुआ है।

6. **प्रेम और श्रृंगार का चित्रण-** निराला ने अपनी कविता में प्रेम और श्रृंगार का भी चित्रण किया है। यह प्रेम लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार का है। भाषा शैली– निराला जी की भाषा संस्कृत गर्भित है। त्यों इन्होंने उर्दू–फारसी के शब्दों का नितान्त बहिष्कार भी नहीं किया है। इनके काव्य में ओज की मात्रा अधिक है। यही नहीं निराला की भाषा सदैव भावों के अनुसार बदलती है। निराला की काव्यभाषा में संधि समास युक्त विविध जाति तथा ध्वनि वाले शब्दों का आधिक्य है। उनमें संगीत का स्वर भाषा के प्रवाह को और अधिक गति देता है। वाक्यों में कसाव, शब्दों में मितव्ययता और अर्थ सघनता उनकी काव्य भाषा की विशेषताएं हैं। इनका काव्य विभिन्न अलंकारों, छन्दों, बिम्ब–योजना और प्रतीक योजना से अलंकृत है। निराला निश्चय ही हिन्दी के महान कवि थे।

(ग) घनानंद

जीवन परिचय-रीतिकाल के रीतिमुक्त कवि घनानंद का जन्म सन 1673 ई. में हुआ माना जाता है। घनानंद दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह के मीर मुंशी जाति से वे कायस्थ थे। इनका किसी सुजान नामक वेश्या से प्रेम था। एक बार बादशाह ने इनसे दरबार में गाने के लिए कहा, परन्तु इन्होंने यह शर्त रखी कि यदि सुजान दरबार में आए तो गाना सुनाएंगे। सुजान के आ जाने पर ये उसकी तरफ मुँह करके गाने लगे। घनानंद की पीठ बादशाह की ओर हो गई। बादशाह ने नाराज़ होकर इन्हें अपने दरबार से निकाल दिया। इन्होंने सुजान को अपने साथ चलने के लिए कहा परन्तु उसने इन्कार कर दिया। उसके इस व्यवहार से इन्हें संसार से विरिक्त हो गई। वे श्रीकृष्ण भक्ति में लीन होकर उनका गुणगान करने लगे। अन्त में वृंदावन जाकर ये भक्ति–सम्प्रदाय में दीक्षित हो गए। कहते हैं कि नादिरशाह के सिपाहियों द्वारा इनके हाथ काट दिए जाने पर सन 1760 ई. में इनकी मृत्यु हो गई।

रचनाएँ:- घनानंद के लिखे कुल 40 ग्रंथ बताए जाते हैं। इनमें से प्रसिद्ध रचना इस प्रकार से है–

1) सुजान सागर 2) विरह लीला 3) रसकेलि वल्ली 4) कृपाकाण्ड 5) घनानंद कवित्त 6 इश्कलता
7) प्रेम सरोवर 8) कोकसार 9) नाम माधुरी 10) कृष्ण कौमुदी

काव्य विशेषताएँ:- घनानंद की प्रसिद्धि उनकी गहन विरहानुभति के कारण रही है, परंतु उन्होंने संयोग –श्रृंगार की भी रचना की थी। रामचंद्र शुक्ल ने इन्हें वियोग–श्रृंगार का प्रधान मुक्तक कवि माना है। उन्होंने लिखा है–'प्रेममार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जवाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रज भाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ। इनके काव्य में निम्नलिखित विशेषताएँ इस प्रकार से हैं–

1. **श्रृंगार चित्रण:-** घनानंद ने यद्यपि श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों पर खुल कर लिखा है, पर वियोग की अन्तर्दशाओं की ओर उनकी दृष्टि अधिक रही है। इसी से इनके वियोग सम्बन्धी पद्य ही प्रसिद्ध हैं। उनका वियोग प्रशान्त और गम्भीर है।

2. **प्रेम का स्वरूप:-** घनानंद के काव्य में प्रेम अतिशय मांसल न होकर सूक्ष्म और मानसिक है। इसमें कृत्रिमता का अभाव है। इस स्वच्छन्द प्रेम में किसी प्रकार का बनावटी, टेढ़ापन और चतुराई नहीं है। सच्चा प्रेमी ही इस रास्ते पर निष्कपट हृदय रख कर चल सकता है।

3. **सौंदर्य चित्रण:-** घनानंद के काव्य में सौंदर्य चेतना का स्थूल वर्णन न होकर व्यापक सौंदर्य चेतना प्रकट हुई है। 'सुजान' नाम से घनानंद को बहुत प्रेम है। यत्र–तत्र इनके कवित्तों में 'सुजान' का नाम आता है। इनकी कविता में प्रिया की भंगिमाओं, तिरछी चितवन, प्रेमपूर्ण वार्तालाप का चित्रण ही अधिक हुआ है।

भाषा शैली:- घनानंद ने अपने काव्य में ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। घनानंद के काव्य में अलंकारों का सहज प्रयोग भी प्रशंसनीय है। इनके काव्य में रूपक उत्प्रेक्षा और उपमाओं का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। इन्होंने कवित्त और सवैया शैली की वर्णन पद्धति को ही अपने काव्य का विषय बनाया। यह कहना उचित ही होगा कि भाषा, शैली और अलंकार प्रयोग की दृष्टि से घनानंद का काव्य श्रेष्ठ है। रस की दृष्टि से घनानंद का काव्य मुख्यतः श्रृंगार रस प्रधान है।

प्र.11 **निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या:**

उत्तर (क) **प्रसंग :-** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक अन्तरा भाग–2 के अन्तर्गत चन्द्रधर शर्मा द्वारा रचित लेख ''सुमिरिनी के मनके'' के अन्तर्गत संग्रहित लघु लेख ''घड़ी के पुर्जे'' से लिया गया है। लेखक ने इसमें धर्म के रहस्यों को जानने पर धर्म उपदेशकों द्वारा लगाए गए मिथ्या प्रतिबन्धों पर प्रहार किया है। उन्होंने अपनी बात को घड़ी के दृष्टान्त देकर और अधिक सीक किया है।

व्याख्या- लेखक गुलेरी जी कहते हैं कि घड़ी खोलकर देखना और उनकी जानकारी प्राप्त करना कोई ऐसा काम नहीं है, जो सीखा न जा सके। घड़ी को ठीक करना लोग सीखते भी हैं और सिखाते भी हैं। धर्मात्मा लोग धर्म के रहस्य को समझाने से क्यों कतराते हैं। यदि घड़ी ठीक करना सीखा जा सकता है तो धर्म के रहस्यों को भी आम आदमी समझ सकता है। गुलेरी जी व्यंग्य पूर्वक कहते हैं कि आज के महात्माओं की हालत उन घड़ीसाज़ों की सी है जो अपने बाप–दादाओं की पुरानी घड़ियाँ जेब में लिए घूमते हैं परन्तु उन्हें उनसे न समय देखना आता है न उनकी मरम्मत करनी आती है। कहने का भाव यह है कि उन्होंने धर्म ग्रन्थों का भार तो अवश्य उठा रखा है परन्तु वे उसे न पढ़ना जानते है न उन्हें समझ अथवा समझा सकते हैं। उनकी हालत ऐसे मूर्ख

घड़ीसाज़ों की सी है जो न तो स्वयं अपनी घड़ी को ठीक कर पाता है और न ही किसी दूसरे को अपनी घड़ी को हाथ लगाने अर्थात ठीक करने को देता है। पौंगा पण्डित धर्म के नाम पर अज्ञान और अन्ध विश्वास ही फैलाते हैं।

विशेष–

(1) मूर्ख धर्म–प्रचारकों की तुलना अनाड़ी घड़ीसाज़ों से की है जो न तो अपनी घड़ी को ठीक कर पाता है और न ही किसी अन्य को उसे हाथ लगाने देते हैं।

(2) भाषा सरल बोलचाल की है। व्यंग्यात्मक एवं वार्तालाप की शैली अपनाई गई है।

(3) धार्मिक अन्धविश्वासों और रूढ़िवादिता का विरोध किया गया है।

उतर (ख) **प्रसंग-** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक अन्तरा भाग–2 के अन्तर्गत सुप्रसिद्ध कथाकार अगजर वजाहत द्वारा रचित लघुकथा 'शेर' से लिया गया है। लेखक महोदय बकरे के द्वारा शेर की असलियत का वर्णन करवाते हैं। शेर सत्ता का और सींग वाला बकरा विचारशील शहरी का प्रतीक है। गधा कहता है कि–

व्याख्या- उसने सुना कि शेर अहिंसा और मिलजुल कर रहने का पूरा समर्थन करता है इसलिए उसने शिकार करना छोड़ दिया है। अब जंगली जानवरों को उससे कोई भय नहीं। बकरे ने अनेक जानवरों को शेर के मुख में जाते देखा था। शेर अर्थात् सत्ता ने अब अपना दमनकारी, हिंसक चेहरा बदल दिया है और प्यार–मुहब्बत का चेहरा लगाकर वह आम आदमी की हत्या करती है वैसे ही शेर अहिंसा और सह–अस्तित्व की बात करके सबको अपने मुँह में प्रवेश करने के लिए तैयार कर रहा था। बकरा एक दिन शेर के निकट गया। शेर सोया हुआ था। उसके कर्मचारी बाहर कार्यालय का काम निपटा रहे थे अर्थात् बचे–खुचे जानवर खा रहे थे। बकरे ने पूछा कि क्या शेर रोज़गार भी देता है। शेर के कर्मचारियों ने कहा कि शेर के मुँह में रोज़गार दफ़तर भी है, तुम भीतर जाओ। बकरा सींग वाला था, धोखे में नहीं आया और भाग खड़ा हुआ।

विशेष–

(1) सत्ता का बाहरी स्वरूप प्रजातान्त्रिक और शान्तिप्रिय दिखता है परन्तु उसका मूल चरित्र हिंसक और दमनकारी ही है।

(2) प्रतीकात्मक शैली और सरल भाषा में कथा कही गई है।

उत्तर (ग) **प्रसंग-** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा भाग–2 के अंतर्गत हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित ललित निबन्ध 'कुटज' से लिया गया है। लेखक द्विवेदी जी स्पष्ट करते हैं कि सारी सृष्टि उस ईश्वर के नियमानुसार चल रही है। इसलिए किसी से डरने की जरूरत नहीं।

व्याख्या- लेखक द्विवेदी जी कहना चाहते हैं कि जो व्यक्ति यह सोचता है कि वह दूसरों को हानि पहुँचा सकता है या लाभ दे सकता है, वह गलतफ़हमी का शिकार है। कोई किसी का उपकार अथवा अपकार नहीं कर सकता। कोई किसी का कुछ बना या बिगाड़ नहीं सकता। हमारे कुछ करने से किसी को सुख मिल जाए तो यह अच्छी बात है परन्तु यह होता है ईश्वरीय इच्छा से ही। यदि किसी के भाग्य में सुख नहीं लिखा तो आप चाहकर भी उसे सुख नहीं दे सकते। किसी को सुख पहुँचाने का अभिमान भी उतना ही गलत है जितना की किसी को दुःख पहुँचा सकने का घमण्ड।

विशेष–

(1) सृष्टि उस नियन्ता के नियमों के अनुसार चलती है। मनुष्य को अपने कर्मों का श्रेय नहीं लेना

चाहिए।

(2) भाषा सरल है। वार्तालाप शैली का प्रयोग हुआ है।

(3) सुख–दुख भाग्य से मिलते हैं, किसी की कृपा से नहीं।

प्र.12 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर

उत्तर (क) बचपन में शुक्ल जी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हरिश्चन्द्र राजा में भेद नहीं कर पाते थे और दोनों को एक ही मानते थे। उस समय उनकी आयु मात्र आठ वर्ष की ही थी। हरिश्चन्द्र के प्रति उनके मन में अद्भुत प्रेम और आश्चर्य का भाव रहता था। जब उन्हें पता चला कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के एक मित्र उसी मिर्जापुर में रहते हैं जहाँ वे रह रहे थे उन्हें विशेष आनन्द की अनुभूति हुई।

उत्तर (ख) कौशाम्बी के गांवों में घूमते हुए लेखक को एक खेत के किनारे बुद्ध की आठ फटु लम्बी मूर्ति मिली। जैसे ही वह उसे उठाने लगे तो एक बुढ़िया ने आकर उन्हें रोक दिया और मूर्ति पर अपना हक जताया। उसने बताया कि मूर्ति खेत से निकालते समय उसके हल की नोट टूट गई है। उसकी भरपाई कौन करेगा? लेखक बुढ़िया के लालच को समझ गया। उसने अपने जेब के रुपये खनकाते हुए बुढ़िया का नुकसान पूरा करने के लिए दो रुपये देने की पेशकश की। बुढ़िया तुरन्त मान गई। लेखक महोदय लाल पत्थर की, प्राचीनतम बुद्ध मूर्ति को जिसका सिर कटा था दो रुपये में खरीद कर लाने में सफल हो गए।

उत्तर (ग) लेखक भीष्म साहनी जी 1938 में सेवाग्राम गए थे। वहां वह अपने बड़े भाई बलराज साहनी से मिलने गए थे जो आश्रम में रहकर ''नई तालीम'' पत्रिका के सह सम्पादक के रूप में काम कर रहे थे। भीष्म जी वहां पर अपने भाई के साथ तीन सप्ताह तक रहे थे। गांधी जी को निकट से देखने और जानने का अवसर भी उन्हें सेवाग्राम में रहते हुए मिला था।

उत्तर (घ) साहित्य के पाँच जन्य से लेखक का अभिप्राय ऐसे साहित्य के सृजन से है जिसे पढ़–सुनकर हताश लोग युद्ध के लिए तैयार हो जाएँ, उनमें नया उत्साह भर जाए। भगवान कृष्ण ने महाभारत के युद्ध के प्रारम्भ में अपना पाँच जन्य नामक शंख बजाया था जिससे महाभारत प्रारम्भ हुआ था। अच्छा साहित्य पाँच जन्य की तरह संघर्ष को बढ़ावा देता है।

प्र.13 निम्नलिखित निबन्धकारों का सहित्यिक परिचय

उत्तर (क) **पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी**

जीवन परिचय– पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म सन् 7 जुलाई 1883 ई. में पुरानी बस्ती जयपुर के एक समृद्ध घराने में पंडित शिवराम शास्त्री के घर हुआ था। उनके पिता पं. शिवराम शास्त्री हिमाचल प्रदेश के गुलेर नामक गाँव से संबंध रखते हैं। इसी कारण उन्हें गुलेरी कहते थे। बी.ए. की परीक्षा में गुलेरी जी विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम रहे थे। सन् 1904 ई. में गुलेरी जी मेयो कॉलेज अजमेर में संस्कृत के प्रधान अध्यापक लगे। अध्यापक के रूप में उनका बड़ा मान–सम्मान था। गुलेरी जी की असाधारण प्रतिभा से प्रभावित होकर

पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने इन्हें बनारस बुला भेजा। बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के प्राच्य विभाग में 11 फरवरी, 1922 ई. को प्राचार्य बने। मात्र 39 वर्ष की अल्पायु में काशी में उनका 12 सितम्बर, 1922 ई. को निधन हुआ।

भाषाविद् गुलेरी जी- गुलेरी जी बहुभाषाविद् थे। संस्कृत, नेपाली, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, अवधी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी, बंगला और हिमाचली के साथ–साथ अंग्रेजी, लैटिन, फ्रेंच आदि भाषाओं में भी गुलेरी जी की अच्छी गति थी। प्राचीन इतिहास और पुरातत्व उनका प्रिय विषय था। गुलेरी जी अपने जीवन काल में चार पत्रिकाओं से जुड़े रहे जो इस प्रकार से हैं–

1. समालोचक : 1903 से 1906 ई. तक
2. मर्यादा : 1911 से 1912 ई. तक
3. प्रतिभा : 1918 से 1920 ई. तक
4. नागरी प्रचारिणी पत्रिका : 1920 से 1922 ई. तक

रचनाएँः- गुलेरी जी उत्कृष्ट कोटि के निबंध–लेखक व सुप्रसिद्ध कथाकार रहे हैं। 'गुलेरी रचनावली' और 'गुलेरी रचना संचयन' में इनके सम्पूर्ण निबन्ध प्रकाशित हैं। गुलेरी जी की तीन कहानियां हैं।

(1) सुखमय जीवन (2) बुद्धू का कांटा और (3) उसने कहा था। इसमें अंतिम कहानी '' उसने कहा था'' ने गुलेरी जी को अमर बना दिया। उन्होंने कुछ निबन्ध भी लिखे हैं। उनके प्रसिद्ध निबंधों में ''कछुआ धर्म'', ''मारेसि मोहि कुठांव'' तथा ''पुरानी हिन्दी'' को गिना जाता है। उन्होंने सुमरिनी के मनके शीर्षक से भी कुछ लघु निबंध लिखे हैं।

साहित्यिक विशेषताएँः- पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी उच्च कोटि के इतिहास, साहित्य चिंतक, निबन्ध–लेखक तथा चर्चित कथाकार हैं। उनके निबंधों के आधार पर उनका जो व्यापक ज्ञान–सम्पन्न व्यक्तित्व उभरता है, वह बेजोड़ है। वे विलक्षण विद्वान थे। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। वे एक साथ कवि, समालोचक, पत्रकार, निबंध लेखक व कथाकार थे। प्राचीन इतिहास और पुरातत्व उनका प्रिय विषय था। उनकी गहरी रुचि भाषा विज्ञान में थी।

भाषा शैलीः- गुलेरी जी बहुभाषा विद् थे। उन्होंने संस्कृत, पाली, अंग्रेजी और हिन्दी भाषा में लिख कर जादुई कमाल दिखाया है। उनकी भाषा अत्यन्त प्रौढ़, सजीव, प्रांजल एवं भावानुकूल है। इनके निबंधों में व्यंग्य और हास्य के मिले–जुले भाव मिलते हैं। उन्होंने अपने समय की प्रचलित सभी शैलियों का प्रयोग किया है। कई निबंध विवरणात्मक तो कुछ विश्लेषणात्मक शैली में लिखे बेजोड़ हैं। गुलेरी जी सरल, बोलचाल की मुहावरेदार भाषा के पक्षधर थे।

उत्तर (ख) **हजारी प्रसाद द्विवेदी**

जीवन परिचय - डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के समर्थ आलोचक, सफल साहित्यकार एवम् उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में आरत दुबे का छपरा में सन् 1907 में हुआ था। आरत दुबे इनके परदादा थे। इन्होंने संस्कृत महाविद्यालय काशी से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सन् 1930 में ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की। उसी वर्ष द्विवेदी जी की नियुक्ति शांतिनिकेतन में हिन्दी अध्यापक के रूप में हुई। 1927 ई. में श्रीमती भगवती देवी से इनका विवाह हुआ। द्विवेदी जी के चार पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं। सन् 1950 ई. में आपको काशी

विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग का अध्यक्ष बनाया गया। सन् 1960 में कुछ समय तक पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया। यहाँ से लौट कर ये काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोवाइस चांसलर बने। भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया था। 'आलोक पर्व, पुस्तक पर उन्हें साहित्य आकादमी ने भ पुरस्कृत किया था। 19 मई 1979 ई. को दिल्ली में द्विवेदी जी का देहान्त हो गया।

रचनाएँ- द्विवेदी जी का रचना–संसार बहुत विस्तृत था। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे वे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा बंगला आदि भाषाओं के भी ज्ञाता थे। इतिहास, संस्कृत, दर्शन, अर्थशास्त्र आदि के आप व्याख्याता रहे। इन्होंने उपन्यास, निबंध तथा आलोचना के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कृतियों का योगदान किया है। प्रमुख रचनाऐं इस प्रकार हैं :

आलोचनात्मक ग्रन्थ- 'सूर–साहित्य', 'कबीर', 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', कालिदास की लालित्य –योजना आदि।

उपन्यास- 'चारू चन्द्रलेख', 'बाण भट्ट की आत्मकथा', 'पुनर्नवा', 'अनामदास का पोथा'।

निबन्ध-संग्रह- 'अशोक के फूल,' 'विचार और वितर्क', 'कल्पलता', 'कुटज' तथा 'आलोक पर्व' आदि। द्विवेदी जी की सभी रचनाएँ अब हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली के ग्यारह भागों में संकलित हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ- आचार्य हजारी प्रसाद के साहित्य की पहली विशेषता प्राचीन और नवीन का अद्भुत समन्वय है। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति की गहरी पैठ और विषय विविधता के दर्शन होते हैं। उनके निबंधों की दूसरी विशेषता इनमें विचार और भावना का भी सामंजस्य है। उन्होंने श्रेष्ठ कोटि के ललित निबंधों की रचना की है। द्विवेदी जी भारतीयता के विश्वासी हैं। यही कारण है कि इनके निबंधों में भारतीय संस्कृति, ज्ञान व दर्शन आदि गम्भीर विषयों का प्रतिपादन किया गया है। इनके निबन्धों की एक अन्य विशेषता यह भी है कि इन्होंने प्रकृति के मनोरम एवम् भावपूर्ण चित्र उकेरे हैं। 'अशोक के फूल', बसन्त आ गया तथा नया वर्ष आ गया' आदि निबंध पूर्ण रूप से प्रकृति परक हैं। लेखक के कई निबंधों में देश–प्रेम भी बखूबी उजागर हुआ है।

भाषा शैली- ''शैली ही व्यक्तित्व है''। यह उक्ति द्विवेदी जी पर पूरी तरह चरितार्थ होती है। द्विवेदी जी के व्यक्तित्व में पांडित्य और सरलता का मिश्रण है। इसके साथ ही उनकी भाषा में दुसहता का दोष नहीं मिलता। यह भाषा प्रवाहमयी व भाव–व्यंजक भी है। सामान्य रूप से इनकी भाषा में सहज प्रचलित तत्समता ही मिलेगी। द्विवेदी जी की भाषा सरल होते हुए भी प्रांजल है। व्यंग्य–शैली के प्रयोग द्वारा उन्होंने अपने निबंधों पर पांडित्य के बोझ को हावी नहीं होने दिया है। स्थानीय और देशज शब्दों को द्विवेदी जी ने प्राथमिकता दी है। उर्दू और अंग्रेजी के प्रचलित शब्द भी इनके निबंधों में सहज उपलब्ध हैं। भाषा की दृष्टि से उन्होंने हिन्दी की गद्य शैली का जो रूप दिया, वह हिन्दी साहित्य के लिए वरदान रूप है। स्थान–स्थान पर संस्कृत साहित्य से उदाहरण देकर वह अपनी बात को पुष्ट करते चलते हैं। यह द्विवेदी जी की निजी विशेषता है। द्विवेदी जी ने अपनी कृतियों में मानव जीवन को बहुत महत्व दिया है।

प्र.14 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर :–

उत्तर (क) प्रेमचन्द द्वारा रचित उपन्यास ''रंगभूमि'' में भैरों द्वारा भिखारी सूरदास को झोंपड़ी जला दी गई। सूरदास अपनी झोंपड़ी की राख पर बैठा सोचता है कि यह राख केवल उस घास–फूस की नहीं थी जिससे वह

झोंपड़ी बनी थी बल्कि वह तो उसकी अभिलाषाओं की भी राख थी। उसने झोंपड़ी में अपनी उम्र भर की कमाई एक थैली में छुपा कर रखी थी। उसके पास पाँच सौ रुपये थे जो थैली में छुपा कर रखे थे। वह रात भर अपनी जली झोंपड़ी की राख में अपने रुपये खोजता रहा। पर उसे वह पोटली नहीं मिली। वह उन रुपयों से मिठुआ की शादी करना चाहता था, पितरों का पिंड दान करना चाहता था और अपने घर के आगे लोगों के लिए कुआँ खुदवाना चाहता था। ये सारे काम वह चुपचाप करना चाहता था ताकि सारे लोग हैरान रह जाएँ कि उसके पास इतने पैसे कहाँ से आए। लोग समझें कि भगवान दीनजनों की सहायता करते हैं। रुपयों के न मिलने से उसका सब कुछ समाप्त हो गया। उसे लगे यह फूस की राख नहीं, अपितु सभी अभिलाषाओं की राख है।

उत्तर (ख) शैला, भूप की प्रेयसी थी। पहाड़ धँसने के बाद भूपसिंह के माता–पिता, खेत–खलिहान जमीन में धँसकर समाप्त हो गए। वह हिमांग पहाड़ पर जा बसा। उसने वहाँ थोड़ी–सी ज़मीन खेती के लिए निकाल ली। माही गाँव के अन्य लोग पहाड़ छोड़ नीचे तलहटी में जा बसे। जब खेती का काम बढ़ा तो भूप सिंह अपनी प्रेमिका शैला से शादी करके उसे अपने साथ पहाड़ पर ले आया। दोनों ने मेहनत करके ढलवाँ खेत बनाए जहाँ सर्दियों में बर्फ न जम सके और पिघलने पर पानी नीचे बहता रहे। गर्मियों में खेतों में सिंचाई हो सके। इसके लिए दोनों ने मिलकर हिमांग पर ऊपर चढ़कर एक जल स्त्रोत खोजा। एक झरना सूपिनी नदी में गिरता था। क्वार माह में दोनों ने मिलकर पहाड़ को काटकर झरने का जल खेतों तक लाने का प्रबंध किया। क्वार में रात को बर्फ़ जमने से झरने का प्रवाह कम हो जाता था और उसके जल को मोड़ पाना आसान था। इस प्रकार दोनों ने मिलकर पहाड़ पर अपनी मेहनत से नई ज़िन्दगी का चित्र अंकित किया।

उत्तर (ग) बिसनाथ ने बचपन में अपने गाँव की बरसात का खूब आनन्द लिया है। बादल गड़गड़ाते हुए आकाश में उमड़ घुमड़ कर आते तो दिन में ही अन्धेरा सा छा जाता था। छत पर चढ़ कर वह दूर से बारिश को आते देखता था। शोर से ऐसा लगता था मानो घुड़सवारों की सेना घोड़े दौड़ाती आ रही हो। भयानक गरमी से कुत्ते, मुर्गे और बकरियां तंग रहते और बारिश होते ही मैं–मैं , कुक्कडूँ कूं और भौं–भौं करते इधर–उधर भागते। यह माना जाता था कि पहली बरसात की बौछार शरीर पर पड़ने से अर्थात् पहली वर्षा में नहाने से दाद–खाज, फोड़े–फुंसी ठीक हो जाते हैं। बरसात से सारी वनस्पतियाँ घुल जाती और चमक उठती। अधिक बारिश में मकानों की दीवारें गिरतीं, आँधी में टीन छप्पर उड़ जाते। वर्षा के बाद कीचड़, बदबू और गंदे पानी के कीचड़ चारों तरफ लबालब भर जाते थे।

प्र.15 (क) बिसनाथ ने यह शब्द अपने रिश्तेदार के यहाँ एक सुन्दर औरत को देखकर कहे थे जो उनसे दस साल बड़ी थी। बिसनाथ दस साल की उम्र में ही उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया था। उस औरत का शरीर फूलों सा कोमल और सुन्दर था। उसके शरीर की गंध, फूलों की गंध जैसी थी, उसकी चमक चाँदनी के समान थी। उम्र बढ़ने के साथ–साथ बिसनाथ को जहाँ कहीं सौंदर्य दिखाई पड़ा उसमें उन्हें उसी स्त्री का बिम्ब दिखाई पड़ा। प्रकृति के सौंदर्य में, संगीत के माधुर्य में और फूलों की खुशबू में उसे वही औरत दिखाई पड़ी थी जिसकी शादी उन्हीं के गाँव में हो गई थी और जिससे वे उम्र भर शर्माते रहे थे। एक बार बिसनाथ ने उसकी प्रशंसा करते हुए कह दिया था कि उसकी शादी जिससे हुई है वह तो उसके सौंदर्य से पागल ही हो गया होगा। उस औरत ने कहा था कि उसके पति से अभी तक तो उसका मिलन भी नहीं हो पाया। बिसनाथ ने उसे जीवन भर पति की

प्रतिक्षा में गलते देखा। संभवतः उसका दुःखद अंत हुआ यही कारण है कि उसकी याद से मृत्युबोध भी बिसनाथ की स्मृति में जुड़ा हुआ है। वह औरत बिसनाथ को औरत रूप में नहीं, जूही की लता बन गई चाँदनी रूप में लगी थी जिसके फूलों की खुशबू आ रही थी। प्रकृति सजीव नारी बन गई थी और बिसनाथ उसमें आकाश चाँदनी, सुंगध सब देखते थे। चाँदनी भी प्रकृति, फूल भी प्रकृति और खुशबू भी प्रकृति थी और वह औरत इन तीनों से मिलकर बनी थी।

अथवा

उत्तर रूप सिंह गढ़वाल में माही गाँव का रहने वाला था। ग्यारह वर्ष पूर्व एक पर्वतारोही मि. कपूर उस क्षेत्र में घूमने आया था और रास्ता भटक गया। उस समय रूप सिंह ने उसे रास्ता दिखाया था। रूप सिंह कपूर साहब के साथ ही घर से चला गया। वह बिना बताए घर से भागा था। ग्यारह वर्ष तक वह मंसूरी में पर्वतारोहण संस्थान में नौकरी करता रहा और उसने अपने माँ–बाप, बड़े भाई भूपसिंह आदि से कोई सम्पर्क नहीं रखा। ग्यारह वर्ष पश्चात् वह अपने हितैषी जिसे वह गाडफादर मानता है, मि. कपूर के बेटे शेखर कपूर के साथ अपने गाँव की ओर घूमने आता है। अपने घर लौटते समय उसे लाज आ रही थी। क्योंकि वह घर से भाग गया था और ग्यारह वर्ष तक कोई पत्र व्यवहार भी नहीं किया था। उसे अपने परिवार से मिलने की खुशी थी और साथ ही अपने पहाड़ों के बीच आने से अपनत्व का अनुभव कर रहा था। उसे झिझक इसलिए हो रही थी क्योंकि वह जानता था कि परिवार के लोग उसे घर से भाग जाने के कारण पता नहीं क्या कहेंगे। इतने लम्बे समय तक अपने लोगों की खोज खबर न लेने के कारण भी उसके मन में झिझक का भाव था।

उत्तर (ख) लेखक प्रभाष जोशी आज के युग में भारत में नदियों की उपेक्षा देखकर दुखी हैं। जिस देश में नदियों को माँ समझ कर पूजा जाता था वहाँ जल को प्रदूषित करने की बात कोई सोच भी नहीं सकता था। आज यह श्रद्धाभाव समाप्त हो गया है। नदियों के किनारे विश्व की सारी महान् सभ्यताएँ पैदा हुई हैं। आज की हमारी सभ्यता नदियों के किनारे शहर बसा रही है, बड़े उद्योग लगा रही है। शहर भर का गन्दा पानी, कचरा और औद्योगिक ज़हरीले रसायन नदियों में फैंके जा रहे हैं। विशालकाय बाँधों से नदियों का जल सूख गया है और वह नालों का रूप धारण करती जा रही हैं। सदानीरा नदियाँ केवल बरसात में पानी से भरती है। वर्ष भर वह शहर के गन्दे नालों का पानी और कचरा ढोती है। पूज्य भाव के बिना पर्यावरण रक्षा सम्भव नहीं।

अथवा

उत्तर भैरो अपनी पत्नी सुभागी को शराब पीकर मारता पीटता था। सुभागी की सास अर्थात् भैरों की माँ भी सुभागी से शत्रुता रखती थी और उसे बेटे के हाथों पिटवाती थी। एक शाम भैरों अपने एक मित्र के साथ घर पर शराब पी रहा था तो उसने सुभागी को शराब के साथ के लिए कुछ चबैना बनाने को कहा। घर में सामान नहीं था। भैरों ने अपनी पत्नी सुभागी को पीटना प्रारम्भ कर दिया। वह अपनी संरक्षण के लिए घर से भाग कर सूरदास की झोंपड़ी में जा घुसी। भैरों भी उसका पीछा करता हुआ वहाँ पहुँचा। सूरदास ने भैरों को स्त्री पर हाथ न उठाने की चेतावनी दी और कहा कि उसे सुभागी को इस प्रकार मारने पीटने नहीं देगा। भैरों लौट आया। भैरों ने शत्रुता की गाँठ मन में बाँध ली। उसकी पत्नी घर से भाग गई इस कारण से उसका अपमान हुआ था। सूरदास ने उसे नीचा दिखाया था। बदला लेने के लिए ही उसने सूरदास की न केवल झोंपड़ी जलाई बल्कि उसकी जीवन भर की संचित पूँजी जो चाँदी के पाँच सौ सिक्कों के रूप में थी, चुरा कर अपने साथ ले गया। भैरों ने अपनी करतूत अपने मित्र जगधर को बता दी थी।